॥६॥ बहु उछरंगें जइ पियुसंगें, सघली वात सुणा वे रे ॥ सुलगे लाज पुत्रनो होशे, पियुनां वचन व धावे ॥ एहने० ॥ ७ ॥ स्वपना फल पूछी पाठकने, गर्ज वहे नृपराणी रे ॥ दीप कहे इम प्रथम वधा वो, गावे सुर इंद्राणी ॥ एहने० ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ वधावो बीजो ॥

॥ श्रावण वरसे रे सुजनी ॥ ए देशी ॥

बीजे वधावे रे सुजनी, चैतर शुदि तेरशनी रजनी ॥ जन्म्या जिनवर जग उपकारी, हुं जाउं तेहनी बलि हारी ॥ बीजे वधावे रे सुजनी ॥ १ ॥ छप्पन दिशि कुमरी तिहां आवे, पूजी शुचिजलशुं न्हवरावे ॥ जीवो महीधर लगें जिनराया, अविचल रहेजो त्रिशलाना जाया ॥ बी० ॥ २ ॥ गिरुआ प्रभुनुं वदन निहाली, ...ली चोपें चतुरा वाली ॥ हरख्यो सुरपति सोहम ...ि, जाणी जन्म्या जगविश्रामी ॥ बी० ॥ ३ ॥ घो ... घंटा तव वजडावे, ततक्षण देव सहु तिहां आवे ॥ ... ग्रही कंचनगिरि पर लावे, स्नान करी जिनने ...वे, ॥ बी० ॥ ४ ॥ एक कोड वली ऊपर ... लाख संख्या परमाणो ॥ सहु ... प्रभुशुं भरिया, ...

॥ ५॥ चिंते लघुवय छे प्रभु वीर, केम सहेशे जल धारा नीर ॥ वीरें तस मन संशय जाणी, करया चित्रित अतिशय नाणी ॥ वी० ॥६॥ माहावीर निज अंगु ठे चंप्यो, ततक्षण मेरु थर हर कंप्यो ॥ मानुं नृत्य करे छे रसियो, प्रभुपद फरसें थइ उल्लसियो ॥ वी० ॥७॥ जाण्युं इंद्रें लहु विरतंत, चोसे कर जोडी भग वंत ॥ शुनहो सेवकनो ए सहेजो, मिथ्या दुःकृत एहनुं होजो ॥ वी० ॥ ८ ॥ स्नात्र करी माताने स मपें, ठवि पहोता नंदीश्वर द्वीपें ॥ पूरण लाहो रे लेवा, अठाइ महोत्सव तिहां करेवा ॥ वी० ॥ ए॥ पुत्र वधाई निसुणी राजा, पंच शब्द वजडावे वाजां ॥ निज परिकर संतोषी वारू, वर्द्धमान नाम ठवे उदारु ॥ वी० ॥ १० ॥ अनुक्रमें जोवन वय जब थावे, नृपति राजपुत्री परणावे ॥ भोगवी प्रभु संसारिक भोग, दीप कहे मन प्रगट्यो जोग ॥ वी० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ वधावो त्रीजो ॥

॥ भवि तुमें वंदो रे सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥ हवे कल्याणक त्रीजुं बोलुं, जगगुरु दीक्षा केरुं ॥ हर्षित चित्तें भावें गावे, तेहनुं भाग्य भलेरुं ॥ सहि तुमें से वो रे, कल्याणक उपकारी ॥ संयम मेवो रे, आ

तमनें हितकारी ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अमृतवयणें, प्रभुनें एम सुणावे ॥ बूक बूक जगनायक लायक, एम कहीने समजावे ॥ स० ॥ २ ॥ एक क्रोड नें आठ लाखनुं, दिनप्रत्यें दीये दान ॥ इणिपरें संवत्सर लगें लईने, दीन वधारे वान ॥ स० ॥ ३ ॥ नंदिवर्द्धननी अनुमति लेइने, वीर थया उजमाल ॥ प्रभुदीक्षानो अवसर जाणी, आव्यो हरि ततकाल ॥ स० ॥ ४ ॥ थापी दिशि पूरवनी साहामा, दीक्षा महोत्सव कीधो ॥ पालखीयें पधरावी प्रभुनें, लाज अनंतो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ सुरगण नरगणने समुदायें, दीक्षायें संचरिया ॥ माता भाव कहे शिखामण, सुण त्रिशला नानडिया ॥ स० ॥ ६ ॥ मोह मल्लनें जेर करीने, धरजो उज्ज्वल ध्यान ॥ केवल कमला वहेली वरजो, देजो सुकृत दान ॥ स० ॥ ७ ॥ एम शिखामण सुणते सुणते, थुणते घहु [illegible] मुष्टिनो लोच करीने, आप थया [illegible] ॥ ८ ॥ धन्य धन्य श्री [illegible] [illegible] जाया ॥ धन्य धन्य नंदी[illegible] [illegible] ॥ स० ॥ ९ ॥ अनुमति [illegible] विचरे जगदाधार ॥ समि[illegible]

गुप्ता, जीवदयाजंकार ॥ स० ॥ १० ॥ सिंह समोवड शुरू थईनें, कठिन कर्म सहु टाले ॥ जगजयवंतो शासननायक, इणिपरें दीक्षा पाले ॥ स० ॥ ११ ॥ दीक्षाकल्याणक ए त्रीजुं, सहि तुमें दिलमां लावो॥ एम वधावो त्रीजो सुंदर, दीप कहे सहु गावो ॥ स०॥ १२ ॥ इति त्रीजो वधावो संपूर्ण ॥

॥ वधावो चोथो ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लागो मोरी सुजनी जी ॥ ए देशी ॥

॥ चोथुं कल्याणक केवलनुं, कहुं हुं अवसर पामी जी॥ जग उपकारी जगबंधवने, हुं प्रणमुं शिर नामी ॥ सांजल सुजनी जी ॥ १ ॥ वैशाख शुदि दशमीने दिवसें, पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ धार जोयण एक रातें चाल्या, जाणी लाज निधान ॥ सां० ॥ २ ॥ अप्पापा नयरीयें आव्या, मह्सेन वन विकसंत जी ॥ गणधरनें वली तीरथ थापन, करवाने गुणवंत ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ भुवनपति व्यंतर वैमानिक, ज्योतिषी हरि समुदाय जी ॥ वीश बत्रीश दश दोय मलीनें, ए चोशठ कहेवाय ॥ सां० ॥ ४ ॥ त्रिगडानी रचना करि सारी, त्रिदशपति अति जारी जी ॥ मध्य पीठ

तमनें हितकारी ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अमृतवयणें,
प्रभुनें एम सुणावे ॥ बूक बूक जगनायक लायक,
एम कहीने समजावे ॥ स० ॥ २ ॥ एक क्रोड नें
आठ लाखनुं, दिनप्रत्यें दीये दान ॥ इणिपरें संव
त्सर लगें लईने, दीन धयारे वान ॥ स० ॥ ३ ॥ नं
दिवर्द्धननी अनुमति लेइने, वीर थया उजमाल ॥
प्रभुदीक्षानो अवसर जाणी, आव्यो हरि ततकाल
॥ स० ॥ ४ ॥ चापी दिशि पूरवनी साहामा, दीक्षा
महोत्सव कीधो ॥ पालखीयें पधरावी प्रभुनें, लाव
अनंतो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ सुरगण नरगणने र
मुदायें, दीक्षायें संचरिया ॥ माता धाव कहे शिखा
मण, सुण त्रिशला नानडिया ॥ स० ॥ ६ ॥ मोह म
ल्लनें जेर करीने, धरजो उज्ज्वल ध्यान ॥ केवल क
मला वहेली वरजो, देजो सुकृत दान ॥ स० ॥ ७ ॥
एम शिखामण सुणतें सुणतें, सुणते बहु नर नारी ॥
पंच मुष्टिनो लोच करीनें, आप थया अणगारी ॥
॥ स० ॥ ८ ॥ धन्य धन्य श्री सिद्धारथनंदन, धन्य
त्रिशलाना जाया ॥ धन्य धन्य नंदीवर्द्धन बंधव,
एम बोले सुरराया ॥ स० ॥ ९ ॥ अनुमति लेई निजबंध
वनी, विचरे जगदाधार ॥ समितियें समिता गुप्तियें

गुता, जीवदयानंभार ॥ स० ॥१०॥ सिद्ध समोवड
कुंढर थईनें, कठिन कर्म सहु टाले ॥ जगजयवंतो
शासननायक, इणिपरें दीक्षा पाले ॥ स० ॥ ११ ॥
दीक्षाकल्याणक ए त्रीजुं, सहि तुमें दिलमां लावो॥
एम वधावो त्रीजो सुंदर, दीप कहे सहु गावो ॥
स० ॥ १२ ॥ इति त्रीजो वधावो संपूर्ण ॥

॥ वधावो चोथो ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लागो मोरी सुजनी
जी ॥ ए देशी ॥

॥ चोथुं कल्याणक केवलनुं, पहुं हुं अवसर पामी
जी ॥ जग उपकारी जगबंधवने, हुं प्रणमुं शिर नामी ॥
सांजल सुजनी जी ॥ १ ॥ वैशाख शुदि दशमीने दिवसें,
पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ बार जोयण एक रातें चा
ल्या, जाणी लाज्ञ निधान ॥ सां० ॥ २ ॥ अप्पापा न
यरीयें आव्या, महसेन वन विकसंत जी ॥ गणध
रनें वली तीरथ थापन, करवाने गुणवंत ॥ सां० ॥
॥ ३ ॥ जुवनपति व्यंतर वैमानिक, ज्योतिषी हरि
समुदाय जी ॥ बीश बत्रीश दश दोय मलीनें, ए
चोशठ कहेवाय ॥ सां० ॥ ४ ॥ त्रिगडानी रचना
करि सारी, त्रिदशपति अति जारी जी ॥ मध्य पीठ

ऊपर हितकारी, वेगा जग उपकारी॥ सां० ॥५॥ गुण पांत्रीश सहित प्रभुवाणी, निसुणे ते सहु प्राणी जी॥ लोकालोक प्रकाशक वाणी, वरसे ते गुणखाणी॥ सां० ॥ ६ ॥ मालकोश गुजराग समाजें, जलधरनी परें गाजे जी ॥ आतपत्र प्रभु शिरपर राजे, जामंफल ठवि ठाजे ॥ सां० ॥ ७ ॥ नीकी रचना त्रणे गढनी, प्रभुनां चारे रूप जी ॥ वली केवल कमलानी शोना, निरखे सुर नर नूप ॥ सां० ॥ ८ ॥ इंद्र नूति आदें सहु मलीनें, जगन करे नूदेव जी॥ विद्या वेदतणा अन्यासी, अनिमानी अहमेव ॥ सां० ॥ ए ॥ ज्ञानी आव्या निसुणी कानें, मनमें गर्व धरंत जी ॥ आव्यो त्रिगडे वाद करेवा, दीठो जगजयवंत ॥ सां० ॥ १० ॥ ततक्षण नामादिक बोलावे, तुह्य सहुने जाणी जी ॥ जीवादिक संदेह निवारी, थाप्यो गणधर नाणी ॥ सां० ॥ ११ ॥ त्रिपदिपामी प्रभु शिर नामी, द्वादशांगी सुविचारी जी ॥ पद ठलाख ठत्रीश सहस्सनी, रचना कीधी सारी ॥ सां० ॥ १२ ॥ चालो तो जोवाने जइयें, वंदीजें जगवीर जी ॥ वली प्रणमीजें सोहम पटधर, गौतम स्वामी वजीर ॥ सां० ॥ १३ ॥ निरखीजें प्रभुजीनी

मुझा, नरजव सफलो कीजें जी ॥ प्रजुजीनुं बहु मान करीने, लाज अनंतो लीजें ॥ सां० ॥ १४ ॥ वारें वारें कहुं हुं तो पण, तुं तो मनमां नाणे जी ॥ म हारा मनमां होंश अछे ते, केवल ज्ञानी जाणे ॥ सां० ॥ १५ ॥ सखिवयणें एम थई उजमाली, चाली सघली वाली जी ॥ निसुणी दश आशातना टाली, प्रजुवाणी लटकाली ॥ सां० ॥ १६ ॥ इणीपरें प्रीश वरदा केवलथी, बहु नर नारी तारी जी ॥ इम व धावो चोथो सुंदर, दीप कहे सुखकारी ॥सां०॥१७॥

॥ वधावो पांचमो ॥

॥ आदिजिनेसर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥

॥ कल्याणक पांचमुं जिनजीनुं, गावो हर्ष अपार वा ला ॥ जगवल्लज प्रजुना गुण गाई, सफल करो अव तार वाला ॥ शासननायक तीरथ वंदो ॥१॥ ए आं कणी ॥ जग चातकने दान दीयंता, विचरंता ज ग जाण वाला ॥ मध्य अपापा नगरी पधास्या, प्रणमे प द महिराण वाला ॥ शा० ॥ २॥ प्रजुयें लालालाज विचारी, अणपूछ्यो उपदेश वाला ॥ शोल पहोर लगें अमृतवाणी, वरस्या जवि उपदेश वाला ॥शा० ॥ ३ ॥ दीवालीदिने मुक्ति पधास्या, पाम्या पर

मानंद वाला ॥ अजर अमरपद ज्ञान विलासी, अ
क्षय सुखनो कंद वाला ॥ शा० ॥ ४ ॥ ए प्रभु कर्त्ता
अकर्त्ता भोक्ता, निजगुणें विलसंत वाला ॥ दर्शन
ज्ञान चरण नें वीरज, प्रगट्या सादि अनंत वाला ॥
शा० ॥ ५ ॥ छे आकाश असंख्य प्रदेशी, तेहना गु
ण छे अनंत वाला ॥ ए तो एक प्रदेशें साहिब, अ
नंत गुणें भगवंत वाला ॥ शा० ॥ ६ ॥ ए प्रभुध्येय
ने सेवक ध्याता, एहमां ध्यान मिलाय वाला॥ त्रिक
जोगें पूरणता प्रगटे, सेवक ए सम थाय वाला ॥
शा० ॥ ७ ॥ गावो पांचमो मोक्ष वधावो, ध्यावो वीर
जिणंद वाला ॥ शुभलेश्यायें जग गुरु ध्यानें, टालो
भवभय फंद वाला ॥ शा० ॥ ८ ॥ इम प्रभु वीरत
णां कल्याणक, पांच भवोदधि नाव वाला ॥ श्रीवि
जयलक्ष्मी सूरीश्वर राजें, में गाया शुभ भाव वाला
॥ शा० ॥ ए ॥ श्रीजिनगणधर आणारंगी, कपूरचं
द विश्राम वाला ॥ तस आग्रहथी हर्षित चित्तें, खं
भात नयर सुठाम वाला ॥ शा० ॥ १० ॥ पंडित
श्रीगुरु प्रेमपसायें, गाया तीरथराज वाला ॥ दीपवि
जय कहे मुजने होजो, तीरथफल माहाराज वाला
॥ शा० ॥ ११ ॥ इति पांच वधावा संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गहूंलियो लखी ले ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम गहूंली ॥

॥ कुंवर पगले पग दरने चढिया ॥ ए देशी ॥

॥ रूडी गहूंली रंग रसाली, जिनशासनमांहे नित्य रे दीवाली ॥ रूडी राजग्रही अति शोहे, ते देखी त्रिभुवन मन मोहे ॥ १ ॥ तिहां तो वीर आव्या रे चोमासें, राजा श्रेणिक वंदे उल्लासें ॥ तस अजय कुंवर प्रधान, मंत्री बहु बुद्धिनिधान ॥ २ ॥ राजा श्रेणिकनी घर नार, शिरोमणि चेलणा सार ॥ वार व्रतनी साडी ज पहेरी, नव वाडनी घाटडी घहेरी ॥ ३ ॥ पहेर्यां जिनगुणजूषण अंगें, गुरुगुण गावे मन रंगें ॥ समकित कचोळुं रे जरियुं, श्रद्धामांहे कुंकुम घोलियुं ॥ ४ ॥ पंचाचार ते पंच रतन, उवणी उपरें करो रे जतन ॥ मन निर्मल मोती वधावे, ते तो शिवरमणीसुख पावे ॥ ५ ॥ बुध न्यायसागरनो शिष्य, जे जणशे जिनगुण जगीश ॥ तस घर होय कोडी कल्याण, वली पामे मोक्ष सुजाण ॥ ६ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ श्री गहूंली बीजी ॥

॥ वाली माहारो आव्या श्रीगोकुल गाम रे ॥ एदेशी ॥

॥ चंद्रवदनी मृगलोयणी, एतो सजि शोले शणगार रे ॥ एतो आवी जगगुरु वांदवा, धरि हैडे हर्ष अपार रे ॥ १॥ एतो मुक्ताफल मूठी नरी, रचे गहूंली परम उदार रे ॥ जिहां वाणी जोजन गामिनी, घन वरसे अखंमित धार रे ॥ २॥ हांरे जिहां रजत कनक रत्नना, सुररचित त्रण प्राकार रे ॥ तस मध्यमणिसिंहासनें, शोनित श्रीजगदाधार रे ॥ ३ ॥ जिहां नरपति खगपति लसपति, सुरपति युत पर्षदा चार रे ॥ लब्धिनिधान गुण आगरु, जिहां गौतमादि गणधार रे ॥ ४॥ जिहां जीवादिक नव तत्त्वना, षद्रव्यनेद विस्तार रे ॥ ए तो श्रवण सुणि निर्मल करे, निज बोध वीज सुखकार रे ॥ ५ ॥ जिहां त्रण छत्र त्रिजुवन उदित, सुर ढालत चामर चार रे ॥ सखि चिदानंदकी वंदना, तस होजो वारंवार रे ॥६॥ २ ॥

॥ अथ श्री गहूंली त्रीजी ॥

॥घरे आवोजी आंबो मोरीयो ॥ ए देशी ॥

॥ माहावीरजी आवी समोसस्या, राजगृही नयरी उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्युं, तिहां वेग श्रीवर्द्धमान ॥ माहा० ॥ १ ॥ वनपालके आवी वधामणी, हरख्यो श्रेणिक नूपाल ॥ गोतम आदि गणधरु, साधवी ठ

त्रीश हजार ॥ माहा० ॥ २ ॥ राजा गज शणगार्या मल
पता, तूर्य तणो नहिं पार ॥ राजा बहु सामग्रीयें संच
र्यो, सायें मंत्री अज्ञयकुमार ॥ माहा० ॥३॥ ढोल ददा
मा गडगडे, सरणाइ अतिहि रसाल ॥ राय गजथकी
हेठा जतर्या, आवी वांदे प्रज्ञुजीना पाय ॥ माहा०
॥४॥ राय त्रण प्रदक्षिणा देई करी, आवी बेठा सज्ञा
मोजार ॥ राणी चेलणा लावे गहूंअली, सायें सखि
योनो परिवार ॥ माहा० ॥५॥ राणियें घाट उंख्यो रे
घूटा तणो, राणी चेलणानो शणगार ॥ राणीयें कुंकुम
घोल्यां कुंकावटी, राणियें लीधुं श्रीफल श्रीकार ॥
माहा० ॥ ६ ॥ राणी चेलणा पूरे गहूंअली, माहा
वीरना पावला हेठ ॥ राणी बहु परिवारें परवरी,
राणी गावे गीत रसाल ॥ माहा० ॥ ७ ॥ राणी ल
ली लली लीये रे लूंछणां, राणी पूजे प्रज्ञुजीना पाय॥
माहावीरनी देशना सांजली, समकित पाम्यो नर
राय ॥ माहा० ॥८॥ प्रज्ञु तुमसरीखा गुरु मुऊ मल्या, म
हारी डुर्गति दूर पलाय ॥ प्रज्ञु सेवक जाणी तार
जो, मुने मुक्ति तणां सुख थाय ॥ माहा० ॥ ए ॥
॥ अथ श्री जीवाजिगम सूत्रनी गहूंली चोथी ॥
॥ जवि तुमे वंदो रे सूरीश्वर गह्राया ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर सुणीयें रे जीवाजिगमनी वाणी, मीठी लागे रे मुजने वीरनी वाणी ॥ ए आंकणी ॥ सूत्र तणी रचना गणधरनी, अर्थ ते वीरें जांख्या ॥ गोतम पूछे बे कर जोडी, आतमहित करी दाख्या॥स० ॥ मी० ॥ १ ॥ जीव अजीव तणी जे रचना, पूछी गोतमस्वामी ॥ नरक निगोद तणी जे वातो, नांखे अंतरजामी ॥ स० ॥ मी० ॥ २ ॥ साते नरक तणां दुःख जांख्यां, आतमहित करी शील्या ॥ जे जे प्रश्न पूछे गोयम, ते ते प्रभुजीयें नांख्या ॥ स० ॥ मी० ॥ ३ ॥ पांच अनुत्तर तणी जे रचना, विविध प्रकारें नांखी ॥ नविक जीवने सुणवा कारण, श्री जिन आगम साखी ॥ स० ॥ मी० ॥ ४ ॥ मीठी वाणीयें गहूंली गावे, वीर जिणंद वधावे ॥ स्वस्तिक पूरे नाव धरीने, अक्षतें करीने वधावे ॥ स० ॥ मी० ॥ ५ ॥ नौतनपुरमां रंगें गाउं, गहूंली मनने उमंगें॥ कहे मुक्ति जिनराजनी वाणी, सुणजो अति उच्छ रंगें ॥ स० ॥ मी० ॥ ६ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री नगवतीसूत्रनी गहूंली पांचमी ॥

॥ नवि तुमें वंदो रे, सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी॥

॥ सहियर सुणियें रे, नगवतीसूत्रनी वाणी ॥ पान

क हर्णीयें रे, आतमने हित आणी ॥ए आंकणी॥ समकितर्वत सर्णी एकरणी, जवसागर उद्धरणी ॥ नरकनिगोद तणी गति हरणी, मोहतणी नीसरणी ॥ स० ॥ १ ॥ पंचम अंग विवाहपन्नत्ती, बीजुं जगवती नाम ॥ शतक एकतालीश बहु उद्देशें, अनंतानंत गुणधाम ॥ स० ॥ २॥ वीर जगत गुरु गौतम गणधर, जोडी मोहनगारी ॥ प्रश्न उत्रीश हजार प्रकाश्या, वाणीनी बलिहारी ॥ स० ॥ ३ ॥ गंगमुनि सिंहा मुनिवरना, प्रश्न सरस छे जेहमां ॥ जाव जेद बहु द्रव्य प्रकाश्यां, अमृतरस छे एहमां ॥ स० ॥ ४ ॥ संग्राम सोनी प्रमुख जे जावी, समकितवंत प्रसिद्धो॥ प्रश्नें कंचन मोर ठवीने, नरजव लाहो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ स्वस्तिक मुक्ताफलशुं वधावो, ज्ञान जक्ति गुरु सेवा ॥ जगवती अंग सुणो बहु जावें, चाखो अमृत मेवा ॥ स० ॥ ६ ॥ वीरक्षेत्रना सकल संघने, विघ्न हरे वरदाई ॥ दीपविजय कहे जगवती सुणतां, मंगल कोटि वधाई ॥ स० ॥ ७ ॥ इति० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री गहूंली उठी ॥

॥ चालोने बाई चालोने जुर्ठ, सोहम गणधर रतना रे ॥ चालोने बाई चालोने० ॥ ए आंकणी ॥

राजगृही नगरी सोहामणी, तस वनमां सोह
आव्या रे ॥ राजा कोणिक वंदन आवे, जात्र ध
ने वधावे रे ॥ चा० ॥ १ ॥ चतुरंगिणी सेना ले
आवे, आनंद मंगल पावे रे ॥ बहु युक्तें करी सोह
वांदे, राजा मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ २ ॥ के
मुनि तपसी केइ व्रतधारी, केइ संजमना रसि
रे ॥ केइ मुनि जिन आणाने धारे, वारे विषय
पाया रे ॥चा० ॥३॥ प्रत्येकें सहु मुनिने वांदे, भ
जल पार उतरया रे ॥ रजत रकेबी हाथ धरी
सोहमस्वामी वधावे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ चिहुं ग
वारक साथीयो पूरे, मोतीथालें वधावे रे ॥ पद्म
ती राणी मनरंगें,शोल सज्या शणगार रे॥ चा० ॥५
बहु सखीने परिवारें राणी, मनमां उलट आणी रे
कोणिक राजा देशना निसुणे, वाणी अमृत सरस
रे ॥चा०॥६॥भाव धरीने राजा राणी, अभिनव
सुणी वाणी रे ॥ जलधर वाणी निसुणी राजा,
ज्यां सुजशनां वाजां रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ भुजपुर मं
ण चिंताचूरण, श्रीचिंतामणि स्वामी रे ॥ चि
गति चूरण गहूंली गाइ, संघने सदा वधाई रे
चा० ॥ ८ ॥ जे गहूंली गाशे मनरंगें, तस घ

रे ॥ पगले पगले रत्न जडावूं, डगले डगले हीरा
ए देशी ॥ चालो रे बाइ चालो रे जूऊं, गौतम स्व
नी रचना रे॥ लब्धिवंत गुणवंता गिरुवा, करता सं
जतना रे ॥ चा० ॥१॥ ठठ्ठे वरसें दीक्षा लीधी, ते
मुनि ठे साथें रे ॥ जिनआणाथी संजम पाले,
वा शिव वधू हाथें रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केइ मुनि
धर पद सेवे ठे, केइ मुनि ध्यान धरे ठे रे ॥
मुनि आगम दान दिये ठे, केइ मुनि विनय क
रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ केइ मुनि चउ अनुजोग जाणे
केइ मुनि जोग वहे ठे रे ॥ केइ मुनि पूर्व सूत्र
ठे, केइ मुनि अर्थ ग्रहे ठे रे ॥ चा० ॥४॥ केइ
मास खमण तप धारी, केइ मुनि तपिया कहीयें रे
इ मुनि विगय तणा परिहारी, केइ मुनि आनम
य रे॥ चा० ॥५॥ केइ आचारांग सूयगडांग जाण
केइ समवायांग गोखे रे ॥ जगवती सूत्र प्रमुख
आगम, जणी आतमरस पोखे रे ॥ चा० ॥
सहु सहियर गुणशीला वनमां, आवी गण
वंदे रे ॥ अमृतथी पण अधिकी वाणी, निसु
मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ पट्टोधर आ

गहूंली पूरी, मुक्ताफलशुं वधाया रे ॥ धन्य धन्य माता पृथ्वी जेणियें, गौतम गणधर जाया रे ॥चा० ॥ ८ ॥ प्रनु वाणी निज चित्त समरती, परपद निज घर आवे रे ॥ दीपविजय कहे गौतम नामें, माहा मंगल पद पावे रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ गहूंली नवमी ॥

॥ जयो तप रोहणी ए ॥ ए देशी ॥

॥ चंपा नगरी उद्यानमां ए, आव्या सोहम गणधार ॥ नमो गुरु जावशुं ए॥ हर्षपूरित नगरीजना ए, वांदवा जाय उजमाल ॥ नमो० ॥ १ ॥ कोणिक राय तव पूछतो ए, आज किहयो उत्सव थाय ॥ ॥ नमो० ॥ इंद्र उत्सव के कौमुदी ए, एवडां लोक किहां जाय ॥ नमो० ॥ २ ॥ के कोइ जैनमुनि आविया ए, के तिहां जाये सवि जन्न ॥ न० ॥ तेह कहे प्रनु सांजलो ए, हर्ष करीने मन्न ॥ न० ॥ ३ ॥ तव कोणिके वात सांजली ए, उल्लसी साते धात ॥ ॥ न० ॥ गज रथ पायक सज्ज कस्या ए, करी वलि निर्मल गात्र ॥ न० ॥ ४ ॥ मस्तक मुकुट रत्ने ज ड्या ए, हइए हार सोहंत ॥ न० ॥ एक सूरज एक चंद्रमा ए, ए दोय कुंमल जलकंत ॥ न० ॥ ५ ॥

चतुरंगी सेनायें परिवस्यो ए, श्रेणिक रायनो पुत्र ॥ न० ॥ तस राणी पद्मावती ए, नवशत अंग ध स्या अणगार ॥ न० ॥ ६ ॥ स्वामी सुधर्मा जिहां अछे ए, तिहां आव्या कोणिक राय ॥ न० ॥ पंच आगम साचवी ए, नकियें हर्षे नराय ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ साथीयो पूरे प्रेमशुं ए, चौगति दुःखवारण हार ॥ न० ॥ पद्मावती राणी वधावतां ए, उवासे अक्षत सार ॥ न० ॥ ८ ॥ करे परम गुरुवंदना ए, नवजल तारण नाव ॥ न० ॥ लहे मुक्तिपद शाश्व तुं ए, जे वांदे गुरु नले नाव ॥ न० ॥ ९ ॥ इति० ॥

॥ अथ गहूंली दशमी ॥

॥समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ए देशी ॥
॥ वनिता नयरी निर्मली ॥ जिनरायाजी ॥ जिहां ... आदिनाथ ॥ सुर नमे पाया जी ॥ ... देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां वेगा ... ॥ सु० ॥ २ ॥ कंचनकांति तनु दीपती ॥ ... जस पास ॥ सु० ॥ दीर्घभुजा ... जि० ॥ तस रूडां नयन विशाल ॥ सु ... अमरना इंदला ॥ जि० ॥ तेणें ... ेज ॥ सु० ॥ मुखशोनायें लाजियो

शशी गयण वसे हररोज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप तरवारें वारिया ॥ जि० ३ जाव रिपु जे आठ ॥ सु० ॥ मुनिने शिवपद आपतां ॥ जि० ॥ जेणें वाख्यो परनो गाठ ॥ सु० ॥ ४ ॥ क्षमाशूर जगवंत जी ॥ जि० ॥ चोत्रीश अतिशय धार ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें करी ॥ जि० ॥ देशना दे जलधार ॥ सु० ॥ ५ ॥ वन पालकना मुखथकी ॥ जि० ॥ तातजी आव्या उद्यान ॥ सु० ॥ सांजली जरत नरेसरू ॥ जि० ॥ आपे वहुलां दान ॥ सु० ॥ ६ ॥ चतुरंगी सेना ले इने ॥ जि० ॥ वांद्या श्रीजगवान ॥ सु० ॥ प्रजुजीनी वाणी सुणे ॥ जि० ॥ चक्री जग्न सुजाण ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ वखाण अवसर साथियो ॥ जि० ॥ लावे ज रतनी नार ॥ सु० ॥ अष्टाम्वस्तिक पूरीया ॥ जि० ॥ गाये गोरी गीत उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ जि० ॥ जे करे श्रुत वहु मान ॥ सु० ॥ दर्शन सागर इम कहे ॥ जि० ॥ तस थाये परम कल्याण ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ गहूंली अग्यारमी ॥

॥ आज हजारी लाखो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधवा, आणी आधिक उमेद ॥ स

चतुरंगी सेनायें परिवस्यो ए, श्रेणिक रायनो पुत्र ॥ न० ॥ तस राणी पद्मावती ए, नवशत श्रंग ध स्या शणगार ॥ न० ॥ ६ ॥ स्वामी सुधर्मा जिहां श्रवे ए, तिहां श्राव्या कोणिक राय ॥ न० ॥ पंच श्राजगम साचवी ए, जक्तियें हर्ष जराय ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ साथीयो पूरे प्रेमशुं ए, चौगति डुःखवारण हार ॥ न० ॥ पद्मावती राणी वधावतां ए, उजाले श्रक्षत सार ॥ न० ॥ ८ ॥ करे परम गुरुवंदना ए, नवजल तारण नाव ॥ न० ॥ लहे मुक्तिपद शाश्व तुं ए, जे वांदे गुरु जले जाव ॥ न० ॥ ए ॥ इति० ॥

॥ श्रथ गहूंली दशमी ॥

॥समुद्रविजय सुत चांदलो॥ शामलिया जी ए देशी ॥ ॥ वनिता नयरी निर्मली ॥ जिनरायाजी ॥ जिहां समोसस्या श्रादिनाथ ॥ सुर नमे पाया जी ॥ सम वसरण देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां वेठा त्रिजुवनना थ ॥ सु० ॥ १ ॥ कंचनकांति तनु दीपती ॥ जि० ॥ गजसरखी जस चाल ॥ सु० ॥ दीर्घभुजा तनु दीप ती ॥ जि० ॥ तस रूडां नयन विशाल ॥ सु० ॥२॥ नरना श्रमरना इंदला ॥ जि० ॥ तेणें थुणियां चर णसरोज ॥ सु० ॥ मुखशोजायें लाजियो ॥ जि० ॥

शशी गयण वसे हररोज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप तरवारें वारिया ॥ जि० ३ चाव रिपु जे आठ ॥ सु० ॥ मुनि ने शिवपद आपतां ॥ जि० ॥ जेणें वाख्यो परनो गाठ ॥ सु० ॥ ४ ॥ क्षमाशूर नगवंत जी ॥ जि० ॥ चोत्रीश अतिशय धार ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें करी ॥ जि० ॥ देशना दे जलधार ॥ सु० ॥ ५ ॥ वन पालकना मुखथकी ॥ जि० ॥ तातजी आव्या उद्यान ॥ सु० ॥ सांजली जरत नरेसरू ॥ जि० ॥ आपे बहुलां दान ॥ सु० ॥ ६ ॥ चतुरंगी सेना लेइने ॥ जि० ॥ वांद्या श्रीजगवान ॥ सु० ॥ प्रजुजीनी वाणी सुणे ॥ जि० ॥ चक्री जरत सुजाण ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ वखाण अवसर साचियो ॥ जि० ॥ लावे ज रतनी नार ॥ सु० ॥ अष्टास्वस्तिक पूरीया ॥ जि० ॥ गावे गोरी गीत उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ जि० ॥ जे करे श्रुत बहु मान ॥ सु० ॥ दर्शन सागर इम कहे ॥ जि० ॥ तस थाये परम कल्याण ॥ सु० ॥ ए ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ गहूंली अग्यारमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधवा, आणी अधिक उमेद ॥ र

हियर मोरी हे ॥ आगम आगमधर सुणी, गुण गुणी जाव अन्नेद ॥ १ ॥ सहीयर मोरी हे ॥ गहूंली करो गुरु आगले ॥ ए टेक ॥ पर परिणामने टालवा, लेवा शिवपुर शर्म ॥ स० ॥ ग० ॥ २ ॥ ऽव्य जाव संजोगथी, जे रहे निरय अलेप ॥ स० ॥ स्याद्वाद नी दीये देशना, जाणंग नय निक्षेप ॥ स० ॥ ग० ॥ ३ ॥ आतमजाव स्वरूपना, जासन जानु समान ॥ स० ॥ स्वपर विवेचन श्रुतथकी, तेणे नक्ति बहु मान ॥ स० ॥ ग० ॥४॥ रुचिवंता सुश्राविका, करवा श्रुतनी बहु नक्ति ॥ स० ॥ विनयवती बहुमानथी, फोरवती आतमशक्ति ॥ स० ॥ ग० ॥ ५ ॥ आतम बाजोठ उपरें, समकित साथियो पूर ॥ स० ॥ लली लली करती लूंठणां, मिथ्यामति करी दूर ॥ स० ॥ ग० ॥ ६ ॥ जे सुणे आगम इण विधें, जन्म सफल होय तास ॥ स० ॥ माहरे नवो नव निरय होजो, ज्ञानमहोदय वास ॥ स० ॥ ग० ॥ ७ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ गहुंली बारमी ॥

॥ जीरे मारे देशना द्यो गुरुराज, उलट आणि अति घणो ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे आवियो हर्ष उल्लास, पूठ दे इंसंसारने ॥ जी० ॥ १ ॥ जीरे० ॥ विलंब न कीजें गुरुरा

स, दास ऊपर दया करो ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ मद्देर करो मे
देरदान, अमृतवचनें सीचियें ॥ जी० ॥ ३ ॥ जीरे० ॥ सु
णवा सूत्र सिद्धांत, देजें दियडुं गहगहे ॥ जी० ॥ जीरे० ॥
जिम मोरा मन मेह, सीताने मनें रामजी ॥ जी० ॥ ३ ॥
जीरे० ॥ कमला मन गोविंद, पारवती ईश्वर जपे ॥ जी०
॥ जीरे० ॥ तिम मुक हृदय मकार जिनवाणी रूचे
घणी ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीरे० ॥ नयगम भंग निक्षेप,
सुणता समकित संपजे ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ उत्पाद
व्यय ध्रुव रूप, स्याद्वाद रचना घणी ॥ जी० ॥ ५ ॥
जीरे० ॥ नवतत्व ने षट्‌ द्रव्य, चार निक्षेप सातनयें
करी ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ निश्चय ने व्यवहार, इणि
परें मुक उलस्याविये ॥ जी० ॥ ६ ॥ जीरे० ॥ कृपा
करो गुरुराज, ने सुणवा इछा घणी ॥ जी० ॥ जीरे० ॥
निज परसत्ता रूप जाणे ने सुणतां थकां ॥ जी० ॥ ७ ॥
जीरे० ॥ जिन उत्तम महाराज नम पदपद्म सेवे सदा
॥ जी० ॥ जीरे० ॥ प्रगटे आत्मस्वरूप, अजय अर
णुगुणी परें जगे ॥ जीरेजी ॥ ८ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ गहूंली तेरमी ॥

॥ आठ लाखनी देशी ॥ नयरी राजगृही सार, लोक
वसे रे अपार ॥ आठ लाख ॥ जंबुस्वामी समोसर्या

रे ॥ १ ॥ पंचसया परिवार, तारे नर ने नार ॥ ॥ श्या० ॥ देशना पुष्कर जलधरें रे ॥ २ ॥ इंडिय जीपे पंच, वारे क्रोधनो संच ॥ श्या० ॥ गुरुमुख देखी नयणां ठरे रे ॥ ३ ॥ जिनमतकज दिनकार, सोहम स्वामी पट्टधार ॥ श्या० ॥ चरणकरण नंमार वे रे ॥ ४ ॥ सोजागी शिरदार, सुविहित मुनि श्रा धार ॥ श्या० ॥ पृथिवी पीठें विचरता रे ॥ ५ ॥ श्र प्रतिबंध विहार, समरस गुण सुखकार ॥ श्या० ॥ वै राग्यें जनताने रीजवे रे ॥ ६ ॥ विचरे देश विदेश, दे बहुला उपदेश ॥ श्या० ॥ बूजवे जाण अजाणने रे ॥ ७ ॥ कोणिक नृप धरनार, स्वस्तिक पूरे उदार ॥ श्या० ॥ ज्ञाननी जक्ति करे घणी रे ॥ ८ ॥ श्रुत जक्ति करे जेह, सुख विलसे नर तेह ॥ श्या० ॥ दर्श नसागर इम वदे रे ॥ ९ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ गहुंली चौदमी ॥

॥समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ॥ ए देशी॥ १
॥ राजगृही नगरी सोहामणी ॥ गुरु श्रावे वे ॥ श्री सोहम गणधार ॥ सुगुरु वधावे वे ॥ पंचसया मुनि साथ ने ॥ गु० ॥ श्रानम सुखना करनार ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ गुणशील नामें उद्यानमां ॥ गु० ॥ उतर्या

ए वनमांय ॥ सु० ॥ वनपालकें जइ वीनव्या ॥ ॥ गु० ॥ ते सांजली कोणिक राय ॥ सु० ॥ २ ॥ चतुरंगी सेना सज्ज करी ॥ गु० ॥ गज रथ पायक नाहिं पार ॥ सु० ॥ घणे आडंबरें राजवी ॥ गु० ॥ वांदे अइ उजमाल ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसार समुद्रने तारवा ॥ गु० ॥ वार वार जवजंजाल ॥ सु० ॥ शोल शणगार सजी करी ॥ गु० ॥ वांदे पद्मावती नार ॥ सु० ॥ ४ ॥ गहूंली करे मन रंगशुं ॥ गु० ॥ अक्षत पूरे सार ॥ सु० ॥ लली लली ले ते उवारणां ॥ गु० ॥ प्रदक्षिणा दे मन सार ॥ सु० ॥ ५ ॥ चिहुं गति वारक साथियो ॥ गु० ॥ करता मनने कोड ॥ सु० ॥ कहे मुक्ति कर जोडिने ॥ गु० ॥ संघ मनना पूरजो कोड ॥ सु० ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ अथ गहूंली पन्नरमी ॥

॥ गर्व नकीजें रे, ए सुगुरु शीखडली ॥ ए देशी ॥ ॥ सरसती चरण नमी करी केशुं, गायशुं आगम वाणी ॥ अर्थ ते अरिहंतजीयें प्रकाश्यो, सूत्र ते गणधर वाणी ॥ जवि तुमें सुणजो रे, सोहम गणधर वाणी ॥ मीठी लागे रे, मुफनें वीरनी वाणी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चतुरा चालो गुरुनी पासें, गहूंली करीयें

मन रंगें ॥ नवशत अंग धरी अणगार, प्रभुगुण गाउं उ
मंगे ॥ ज० ॥ २ ॥ हाथे रजत रकेबी धरीने, मांहे दीप
ना पुत्रने लावो ॥ स्वस्तिक पूरो गुरुने वधावो, गुरु गुण
मधुरा गावो ॥ ज० ॥ ३ ॥ राजगृही नयरें गुणशीलचे
त्यें, तिहां प्रभु वीरजी आव्या ॥ भंभासार ते सांभली
हरख्यो, चतुरंग सेनथी आव्या ॥ ज० ॥ ४ ॥ चौद ह
जार मुनिराज संघातें, साध्वी सहस छत्रीश ॥ इंद्रभू
ति आदें देइ गणधर, प्रभुपरिवार जगीश ॥ ज० ॥ ५ ॥
प्रभु आदि सरवेनें वांदी, मगधाधीश भूपाल ॥ चे
लणा राणी करे ते गहूंली, प्रभुसन्मुख ततकाल ॥
॥ ज० ॥ ६ ॥ कुंकुम घाली साथीयो पूरे, अष्ट कर्म
ने चूरे ॥ चिहुं गति चूरण दुःख निवारण, मनोवं
छित सवि पूरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ श्रीअचलगछपति पूज्य
पट्टोधर, पुण्यसागर सूरिराया ॥ सूरि छत्रीश गुणें
करि शोहे, भवि प्रणमो तस पाया ॥ ज० ॥ ८ ॥
जखौ बंदरे सुंदर श्रावक, गुरुगुणना छे रागी ॥
श्रीवीर प्रभुनो पसाय लहीनें, गातां शुभमति जा
गी ॥ ज० ॥ ९ ॥ आषाढ वदि एकमनें दिवसें
गहूंली गाई मनरंगें ॥ चतुरा सखि सुकंठें गाजो,
भाव धरी उमंगें ॥ ज० ॥ १० ॥ जे सोहागण सखी

जीरे वरण गंध रस फरस रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ जीरे लोक सकलमय इम भख्यो, जीरे कहे गोतम धन्य तुम ज्ञान रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एवा गुरुने आगल गहूंथली, जीरे फतेशिखर अमृतशिव निश्रेणी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्तरमी ॥

॥ राग धोल ॥ वेनी संचरतां रे संसारमां रे, वेनी सद्गुरु धर्मसंजोग ॥ वधावो गहूंथली रे ॥ वेनी सद्दहणा जिनशासननी रे, वेनी पूरण पुण्य संजोग ॥ व० ॥ १ ॥ वेनी सम संतोष साडी वनी रे, वेनी नवब्रह्म नवरंग घाट ॥ व० ॥ वेनी तप जप चोखा ऊजला रे, वेनी सत्यव्रत विनय सुपाट ॥ व० ॥ २ ॥ वेनी समकित सोवनथाल मां रे, वेनी कनक कचोले चंग ॥ व० ॥ वेनी संवर करो शुज साथीयो रे, वेनी आणातिलक अजंग ॥ ॥ व० ॥ ३ ॥ वेनी समिति गुप्ति श्रीफल धरो रे, वेनी अनुजव कुंकुम घोल ॥ व० ॥ वेनी नवतत्त्व हृदये धरो रे, वेनी चरचो चंदन रंग रोल ॥ व० ॥ ४ ॥ वेनी जवजल जेहमां जेदीयें रे, वेनी विवेक वधावो शाल ॥ व० ॥ वेनी वीर कहे जिन शासने रे, वेनी रहेतां मंगलमाल ॥ व० ॥ ५ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ गहूंली अढारमी ॥

॥ बाहालोजी वाचे छे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ सोहमस्वामी समोसस्या रे, राजग्रहीउद्यान ॥ बहु मुनि परिकर संजुता रे, चउनाणी जगवान ॥ सोह०॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गुरुमुख कमल विलोकवा रे, आवे श्रेणिक माहाराय ॥ जाव जक्ति करी वांदिया रे, गणधर केरा पाय ॥ सो० ॥ २ ॥ श्रीगुरुजी दीये देशना रे, ते सांजले श्रोतावृंद ॥ अमीय समाणी वाणी सुणी रे, मनमां पामे आनंद ॥ सो० ॥ ३ ॥ वखाण अवसर जाणीने रे, ज्ञाननी जक्ति निमित्त॥ सतीय शिरोमणि चेलणा रे, साथीयो पूरे पवित्त ॥ ॥ सो० ॥ ४ ॥ ज्ञान परम गुणजीवने रे, जे तस जक्ति करेय ॥ तेहने ज्ञाननी संपदा रे, दर्शन एम कहेय ॥ सो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ गहूंली उगणीशमी ॥

॥ राजग्रही समोसस्या ॥ गुरुराज रे ॥ सोहम स्वामीआज ॥ समारो काज रे ॥ सहीयर मोरी वांदवा ॥ गु० ॥ आवो लेई वर साज ॥ स० ॥ १ ॥ गुरुआगल रचो गहूंअली ॥ गु० ॥ डुविधजाव बहु जावि ॥ स० ॥ अध्यातम वर थालमां ॥ गु० ॥ गु

॥ अथ गहूंली एकत्रीशमी ॥

॥ गाम नगर पुर विचरंता, गुरु आवे छे, मुनि पंच सया परिवार ॥ साथें लावे छे ॥ सहस अढार सीलांग ना, जे धोरी छे ॥ ब्रह्मचर्यना भेदअढार, आप विचारी छे ॥ १ ॥ जीवभेद बत्रीशनी, दया जाणी छे ॥ निरुपाधिक देशना सार, नाथ वखाणी छे ॥ दीक्षा दोष निवारवा, नर तारे छे ॥ पाप स्थानना दोष अढार, दूर निवारे छे ॥ २ ॥ रत्नत्रयि आराधता, गुरु राजे छे ॥ गुरुराजगृही उद्यान, अधिक दिवाजे छे ॥ कनककमल वीराजता, गुरु गाजे छे ॥ प्रभुवीर पट्टोधर धीर, भावठ भांजे छे ॥ ॥ ३ ॥ जंबु कुमरयुक्तें करी, गुरु, भेट्या छे ॥ कहे मुख थी महारा आज, पातक मेट्यां छे ॥ समुद्रसिरी जंबू तणी, पट्टराणी छे ॥ वलि बीजी साते नार, गुणनी खाणी छे ॥ ४ ॥ पहेरी करुणा कांचली, मन मोती छे ॥ ओढी समकित साडी मांहे गुरुमुख जोती छे ॥ थिरता भावना थालमां, व्रत मोती छे ॥ भरी कुंकुम राग कचोल, पुण्यपनोती छे॥ ५ ॥ श्रद्धाभावनो साथियो, त्यां पूरे छे॥ ठवि पंचाचार रतन, चिहुं गतिचूरे छे ॥ ते देखी मोहरायनी, मात झुरे छे ॥ ए लेशे शिवसुखराज, चढते नूरे छे ॥ ६ ॥ गहूंली करो गुरु

आगलें, मन मान्यें छे ॥ हवे जंबु सोहम पास, संजम जाचे छे॥ पांचसें सत्तावीशशुं, व्रत लीधुं छे ॥ कहे मोहन माहाराज, कारज सीधुं छे ॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ गहूंली बावीशमी ॥

॥ बेनी नरभव पुण्यें पामी रूअडा रे, शुचि रुचि करो शणगार रे ॥ वधावो गुरुने मोतीयें रे॥ बेनी दर्शन करो आदि देवनुं रे, बेनी वली वली वांदो रे अणगार रे ॥ व० ॥ १ ॥ बेनी मयगल परें मुनि मालाता रे. बेनी मधुकर परें लीयें आहार रे ॥ व० ॥ बेनी आतमराम रमे रंगशुं रे. बेनी सूत्र अर्थ नय जंकार रे ॥ व० ॥ २ ॥ बेनी इम सोहागण पूरें मा थियो रे. बेनी गाउं मंगल गीत रे ॥ व० ॥ बेनी विधिशुं वधावी करो लुंछणां रे. बेनी ए जिन शासन रीत रे ॥ व० ॥ ३ ॥ बेनी पच्चखाण करो पाय पूजीने रे. बेनी वीरवाणी पीयो रसाल रे ॥ व० ॥ बेनी शुद्ध होये आतमा आपणो रे. बेनी शिवसुख लहीयें रसाल रे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेवीशमी ॥

॥ विमलगिरि रंगरसें सेवो ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर मारगमां वसिया. वसी उन्मारगथी ख

सिया, शिववहू खेलणके रसिया ॥ मु० ॥ १॥ वीलुं गुणगाणुं वाल, नगवई अंगें सुविशाल, रहे प्रमत्ते घणो काल ॥ मु० ॥ २ ॥ अंतर मुहूरत स्थितिआवे, निद्रामां गुण पलटावे, पण अप्रमत्त तणे नावें ॥ ॥ मु० ॥ ३ ॥ द्रव्यनाव संजम धरिया, जंगम तीरथ संचरिया, पाखरिया सिंह केसरिया ॥मु० ॥ ४ ॥ दुविहासित सहे न लहे, कण्ण परिसह वीश सहे, मुनिवर आचारांग कहे ॥ मु० ॥ ५ ॥ चक्रवाल दशविध पाले,चरणकरण गुण अजुआले शून्यदहन अवधि टाले ॥ मु० ॥ ६ ॥ पहचा मुनि वरनी आगें, चतुरा अक्षर फल मागे, श्राविका मुनि गुणरागें ॥ मु० ॥ ७ ॥ गहूंली करी निजमल धोती, वधावती ऊलके मोती, लली लली गुरु सन्मुख जोती ॥ मु० ॥ ८ ॥ आगम रयण गुणें रमती गुरुगुण गाती मन गमती, श्रीशुजवीर चरण नमती ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथनो विवाहलो चोवीशमो ॥

॥ पासकुमर महिमा निलो, गुणमणि रयण नंमार॥ अवसर विवाहजिन तणो, गायशुं अति सुखकार ॥ पा० ॥ १ ॥ शुज मंमपें तोरण सोहियें रे, जोतां सुर नरनां मन मोहियें रे, मखीयो वे

ने मासें केसर कीयो रे, चोथे कपूरनी रेख ॥आ०॥
पांचमे इष्ट पूजी जिमो रे, छठे रह्या गर्भावास
॥ आ० ॥ २ ॥ सातमे जाणुं सिंहें चडे रे, आठमे
दीजें दान ॥ आ० ॥ नवमे मासें यतना करो रे, स
वानवें पुत्र रतन ॥ आ० ॥ ३ ॥ धरणीयें पग देई
जनमीया ए, जन्म्या श्रीमाहावीर ॥ आ० ॥ सोना
छरीयें नाल वधेरीयां रे, दायीने कोटी सोनैया दीध॥
माहावीर कुंवर जन्म्या रे ॥ ए आंकणी ॥ ४ ॥ पुत्र
जन्म निज सांचली रे, राय सिद्धार्थने हर्षे न माय
॥ मा० ॥ वधामणीयाने पंचांग पहेरामणी रे, वली
कीधी लाख पसाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ पाणी सार्थे दूध
डे नवरावीया रे, चोखा सार्थे मोतीडे वधाव ॥मा०॥
चीर फाडीनें धालोतियां रे, पलंग पालखडीयें पोढा
व ॥ मा० ॥ ६ ॥ घर घर गूडियो उछले रे, नीलां तो
रण वांध्यां छे धार ॥ मा० ॥ वछजीनी फईजी तेडा
वीयां रे, नाम दीधुं वर्द्धमान ॥ मा० ॥ ७ ॥ मेरु
शिखर ऊपर स्नात्र करे रे, छप्पन कुमरी गावे छे गीत॥
मा० ॥ नाम पडामण हाथीयो रे, दीधां दीधां रत्न
वे चार ॥ मा० ॥ ८ ॥ सोना ते केरुं झुमणुं रे, मांहे
झमकार ॥ मा० ॥ त्रिशला राणी पुत्र तुमा·

रहो रे, देवतणो शिरदार ॥ मा० ॥ ए ॥ फाठा गहुं नी लापशी रे, मांहे माखचीयो गोल ॥ मा० ॥ जा जे घीयें लसलसी लापशी रे, गोत्रज आगल नैवेद्य कराय ॥ मा० ॥ १० ॥ कुंवरनी माता एम जणे रे, कुंवरजी अविचल राज ॥ मा० ॥ सोवन पालणी ये पोढाडीया रे, नीलुडां वस्त्र उंगाड ॥मा०॥११॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली छवीशमी ॥

॥ सरसति सामीने दिल धरी रे, वांडं गुरुने उत्साह॥ कमल पोयण सम लोयणी रे, कामिनी कंचनवान ॥ चमर ढलावो जिणंद प्रजु वीरने रे ॥ ए आंकणी ॥१॥ कंकण नेउर खलकती रे, ललकती कोकिलवान ॥ ग जगति चालशुं चालती रे, मलपती सहियर साथ ॥ च० ॥ २ ॥ कनक कचोलां कुंकुम जरी रे, थाल मुक्ताफल सार ॥ चरम प्रजुजीनें वांदवा रे, शोल स जी शणगार ॥ च० ॥ ३ ॥ प्रह उगमतानी गहूंअली रे, वाजे वीणा सार ॥ चेलणा काढे ठे गहूंअली रे, श्रेणिकनी घरनार ॥ च० ॥ ४ ॥ मोतीनो पूख्यो ठे साथियो रे, ठवीयां पांच रतन्न ॥ चेलणा वधावे ठे मोतियें रे, देशना दिये जगवन्न ॥ च० ॥ ५ ॥ पाट पीठ प्रजु पाउले रे, गाती रंगें रे साज ॥ सोवन सूर

ज ऊगियो रे, सुरतरु मोर्यो रे आज ॥ च० ॥६॥ पूर्वज तूठा पुण्यथी रे, वांद्या वीर जिणंद ॥ सुणी देशना जगवंतनी रे, हरख्यां नर नारी वृंद ॥ च० ॥ ७ ॥ चेलणा चतुराई चित्तमें रे, संजारे दिवस ने रात्र ॥ त्रिशलानंदन देखतां रे, पवित्र थयां मोरां गात्र ॥ च० ॥ ८ ॥ सेवक लक्ष्मीसूरि तणो रे, प्रणमे नाण उदार ॥ वीर प्रजुजीने वांदतां रे, सफल कियो अवतार ॥ च० ॥ ए ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ षडावश्यकसूत्रनी गहूंली सत्तावीशमी ॥

॥ अहो मुनि चारित्रमां रमता, श्रीजिनआणा सुधी धरता, क्रियामारगमां अनुसरता ॥ अहो० ॥ १ ॥ षडावश्यक सूत्रतणी रचना, ते सांजलो जवि एक मना, वाणी अमृत रस जरना ॥ अहो० ॥ २ ॥ प्रथम सामायिक जे दाख्युं, बीजुं चउविसत्थो जांख्युं, तृतीय वांदण दिल राख्युं ॥ अहो० ॥ ३ ॥ प्रतिक्रमण चोथे सुणतां, काउस्सग्ग पांचमे अनुसरतां, छठे पच्चरकाण करतां ॥ अहो० ॥ ४ ॥ षड्विध आवश्यक जे धारे, शुद्ध परिणामें अवधारे, श्रीजिन मारग अजुवाले ॥ अहो० ॥ ५ ॥ स्थापना ज्ञानतणी मांगो, ममता माया दूरें छांगो, तो शमतारुद

होवे जाणो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ इणिपरें सोहमनी वाणी, गहूंली करे चेलणा राणी, गुरु सन्मुख जोवे गुणखाणी ॥ अहो० ॥ ७ ॥ सीहोर नगरें गहूंली गाइ, कहे मुक्ति सुणो चित्त लाइ, श्रीजिन आणा धरो चाइ ॥ अहो० ॥ ८ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ गहूंली अठावीशमी ॥

॥ अरिहा आया रे, चंपावनके मेदान ॥ सुरपति गाया रे, शासनके सुलतान ॥ ए आंकणी ॥ समव सरण सुर मली विरचावे, फूल सचित्त जल थलनां लावे ॥ विकसित जानु सम वरसावे, उपर बेसे रे, मुनिमुख परपदा बार ॥ प्रभु महिमायें रे, पीडा न हुवे लगार ॥ तत्त्वावतारी रे, प्रवचन सारउद्धार ॥ अ० ॥ १ ॥ पुरी शणगारी कोणिक राय, जल छटकायां फूल बिछाय, सजी सामईयुं वंदन आय, उववाई सूत्रें रे, देशना अमृत धार ॥ गोतम पूछे रे, अंबडनो अधि कार ॥ अदत्त न लेवे रे, सात सया परिवार ॥ अ० ॥ २ ॥ पाणी छते तरशां व्रत पाली, गंगा रेवत वच्चें संथा री, देवलोकें पंचम अवतारी, अंबडनामें रे, ते सहु नो शिरदार ॥ अवधिज्ञानी रे, वैक्रियलब्धि उदा र ॥ तापस वेशें रे पाले अणुव्रत बार ॥ अ० ॥

॥ ३ ॥ ते गुणदरिया कौतुक जरिया, कंपिलपुरमां हे संचरिया, नित्य नित्य सहु घर वसती वरिया, सहुको जाणे रे, अम घर उछव थाय ॥ घर घर होशे रे, कौतुक जोवा ते जाय ॥ देव जवांतर रे, अंवड मुक्ति वराय ॥ अ० ॥ ४ ॥ सांजली हइडे हर्ष ज राणी, बहुत साहेलीनी ठकुराणी, नामें सुजद्रा धारणी राणी, चीर पटोली रे, पहेरी निकट ते जाय ॥ घुंघट खोली रे, अंजलि शीश नमाय ॥ केशर घोली रे, साथिये मोती पूराय ॥ अ० ॥ ५ ॥ चतुरा चउमुख चित्त मिलावे, मुक्ताफल दोय हाथ धरावे, श्रीशुज वीरनां चरण वधावे, मंगल गावे रे, रंजा अपछर नार ॥ जगतनो दीवो रे, विश्वंजर जयकार ॥ बहु चिरंजीवो रे, त्रिशला मात मल्हार ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली उंगणत्रीशमी ॥

॥ अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी॥वीरनी आणा शिरधरता, पवयणमायें सुविचरंता, सोहमपाट दीपावंता ॥ अ० ॥ १ ॥ श्रीजिन आणा मती रागी, ड्रव्य जव परिग्रह त्यागी, शिवरमणीशुं लय लागी ॥ अ० ॥ २ ॥ छत्रीश छत्रीशीयें पूरा, रागादिकथी रहे दूरा, शांत मुड्रामांहे ससनूरा ॥ अ० ॥ ३ ॥ वी

रवाणी चित्त अनुसरता, कुमति तणा मद गालंता, आव्या राजगृही फरता ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोणिक भूपतिनी राणी, जामंगलमां उजाणी, धवल मंगल करे गुणखाणी ॥ अ० ॥ ५ ॥ अनुभव ज्ञाने चित्त ठरशे, सद्गुरु अंगें सदा वरसे, जविजलधर चातक वरसे ॥ अ० ॥ ६ ॥ एणी परें जे गुरु गुण गावे, संवरजावें चित्त लावे, महींदसिंह सूरि सुख पावे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ २९ ॥

॥ अथ गहूंली त्रीशमी ॥

॥ सखि राजगृही उद्यानमां, उतरियाश्री जिनराज ॥ वारी जाउं वीरनें ॥ सखि मननो ते सांसो उपशमे, जाणीयें मलीयो छे शिवपुरीनो साज ॥ वा० ॥ १ ॥ सखि देवछंदो तेदेवें रच्यो, तिहां बेठा छे त्रिभुवन राय ॥ वा० ॥ सखि बारे पर्षदा तिहां मली, जीरे सती सुणवाने जाय ॥ वा० ॥ २ ॥ राणी चेलणा ते लावे गहूंअली, राजा श्रेणिकनी घरनार ॥ वा० ॥ जीरे मुक्ता ते फलनो साथियो, जीरे उपर श्रीफल सार ॥ वा० ॥ ३ ॥ सखि ठवणीनी आगल गहूंअली, जीरे विच विच नागरवेल ॥ वा० ॥ जीरे दर ज्ञलुं रे दरिया तणुं, जीरे जेमां छे जाजेरी रेल ॥ वा० ॥

॥ ४ ॥ जीरे वखाण जलुं रे वीरजी तणुं, जीरे सांजले गुणिजन लाख ॥ वा० ॥ जीरे नानी ते नानी नानडी, जीरे नानी ठे शाकर डाख ॥ वा० ॥ ॥ ५ ॥ जीरे नानी ते प्रजुजीनी जीजडी, जीरे बूझव्या जाण अजाण ॥ वा० ॥ जीरे जाट जणे रे बीरुदावलि, जीरे सईयर गावे गान ॥ वा० ॥ ६ ॥ जीरे आ जुगमां जोतां थकां, जीरे कोई न करे प्रजुजीशुं होड ॥ वा० ॥ जीरे जव जव ए जिन जो मले, वसंतसागर कहे कर जोड ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गिरनारजीनो वधावो एकत्रीशमो ॥

॥ प्रथम रेवतगिरि पेखियो, जीहो उपनो अधिक आणंद ॥ वधावो मारे आवीयो ॥ बीजे नेमीशर बहु गुणा, जीहो दीठो दोलतनो दिणंद ॥ व० ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ त्रीजे वधावे प्रजु तुं स्तव्यो, जीहो अगर सुवासि विहार ॥ व० ॥ केसर चंदन कुसुमनी, जीहो पूजा सत्तर प्रकार ॥ व० ॥ २ ॥ चोथे प्रजु चरणनुं, जीहो धरीयें मन शुज ध्यान ॥ चतुर दरिसण चारित्रनां, जीहो गुण गाउं ॥ व० ॥ ३ ॥ आसन युक्ति अनुसरी, जादव गुणलय लीन ॥ व० ॥ जावुं प्रजुगु

जीरे मारे धन्य जदा प्रमुख, साते वेहेनो सोहामणी॥ जीरे० ॥ जीरे मारे सूरीश्वर शिरदार, श्रीयूविजन्द शिरोमणि ॥ जीरे० ॥ ६ ॥ जीरे मारे ध्यान धरो दिन रात, एवा मुनिनुं खांतशुं ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे लेशे मंगलमाल, जे गावे नित्य जावशुं ॥जीरे०॥७॥इति॥

॥ अथ पजूसणनी गहूंली तेत्रीशमी ॥

॥ महारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ परव पजूसण पुण्यने योगें, मलिया सहु गुरु संयोगें रे ॥ मारी सही रे समाणी ॥ सात पांच जेली मलीनें टोली, गहूंली करे मन जोली रे ॥ मा० ॥१॥ घुंघटपट खोली गुरुमुख जोती, तन मनना मल धोती रे ॥ मा० ॥ समकितरागें ने धर्मनी बुद्धि, परिणतिनी वाली शुद्धि रे ॥ मा० ॥ २ ॥ वांदी वधावी गुरुजीनी वाणी, निसुणो जविजन प्राणी रे ॥ मा० ॥ उपशम जावो ने निंदा निवारो,जीव सहुशुं हित धारो रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ गुरुपग मूले संघ सहु खामो, क [illegible] मद वामो रे ॥ मा० ॥ इणदिन आवे व्रत तप कीजें, अधिक अधिक लाहो लीजें रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ पूजा प्रजावना महिमाने देखी, हरखे धरमना गवेषी रे ॥ मा० ॥ चैत्य परवाडी जिनमुख

जोवो, जवजवनां पाप खोवो रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ कल
प सुणीजें प्रजावना दीजें, श्रठाइ महिमा इम कीजें
रे ॥ मा० ॥ गहूंली गावो ने वीरजिन ध्यावो, मलूक
जावना जावो रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ श्रथ चूनडी चोत्रीशमी ॥

॥ श्राठी सुरंगी चूनडी रे, चूनडी राती चोल रे ॥रं
गीली ॥ लाल सुरंगी चूनडी रे ॥ १ बुरान पुरनी
बांधणी रे, रंगाणी ठरंगावाद रे ॥ रंगीली ॥ चोल
मजीठना रंगथी, कसुंबे लीधो हठवाद रे ॥ रंगीली
॥ श्रा० ॥ २ ॥ सूरत शहेरमां संचस्थां रे, जातां जिन
वाणीनें माट रे ॥ रंगीली ॥ चोराशी चोकने चहूवटे
रे, दीठां दोशीडानां हाट रे ॥ रंगीली ॥ श्रा० ॥३॥
नणदी वीराजीने वीनवे रे, ए चूनडीनी होंश रे ॥
रंगीली ॥ चूनडीमां हाथी घोडला रे, हंस पोपट ने
मोर रे ॥ रंगीली ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ समरथ ससरे मू
लवी रे, पासें पीयुजीने राख रे ॥ रंगीली ॥ समकित
सासुना केणथी रे, सोनइया दीधा सवा लाख रे ॥
रंगीली ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ सासूजीने साडीयो रे, ना
नी नणदीनें घाट रे ॥ रंगीली ॥ देराणी जेठाणीनां
जोडलां रे, शोक्यने लावो शा माट रे ॥ रंगीली ॥

आ० ॥ ६ ॥ चूनडी ॐढिनें संचर्यां रे, जातां जिनद् रवार रे ॥ रंगीली माणकमुनियें कोडथी रे, गाइ ए चूनडी सार रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति० ॥३४॥

॥ अथ गहूंली पांत्रिशमी ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रिगुरुपद पंकजनी सेवा, लागी छे मुफ मन हेवा रे ॥ गुरुजी उपकारी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु गुण दरीयो सुपरें जरियो, मुजथी किम जाये तरियो रे ॥गु०॥ १ ॥ पांच ज्ञानमांहे उपकारी, ए श्रुतनी बलिहारी रे ॥ गु० ॥ असंख्य जीवना जव सुविलासें, संख्याता जव प्रकासे रे ॥ गु० ॥ २ ॥ लोकना जाव ते ज्ञानथी कहीयें, सद्गुरु मुखथी लहीयें रे ॥ गु० ॥ दर्शन सहित ज्ञान ते जासे, दर्शन मोहनी नासे रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ विघटे मिथ्यात्व आतम केरो, टाले ते जवनो फेरो रे ॥ गु० ॥ समकितविण संजम नहिं रचना, आगम मांहे छे वचना रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ समकित सहित करे जे किरिया, ते जवसमुद्रथी तरिया रे ॥गु० ॥ एहवी वाणी सोहम केरी, नासे कर्मजो वैरी रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ सोहम पाट परंपर राजे, विजयदेवेंद्र सूरि गाजे रे ॥गु०॥

स्वस्तिक पूरे दुःखने चूरे, वधावे चढते नूरें रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ सूरि गुणे छत्रीश सोहावे, विजयानंद पद पावे रे ॥ गु० ॥ प्रेमथी गावे नवनिध पावे, अमृत शिव सुख ध्यावे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥३५॥

॥ अथ गहूंली छत्रीशमी ॥

॥ मोतीवाला जमरजी ॥ ए देशी ॥

॥ चरणकरणशुं शोजता ॥ व्रतधारी रे सुगुरु जी ॥ जविजन मानस हंस रे ॥ जगत उपकारी रे सुगुरुजी ॥ जंगमतीरथ साधु जी ॥ व्र० ॥ लोज तणो नहिं अंश रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिरूवादिक गुण जर्या, ॥ व्र० ॥ षटकारण लिये आहार रे ॥ ज० ॥ सामुदाणी गोचरी ॥ व्र० ॥ ज्ञानरतन जंमार रे ॥ ज० ॥ २ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ व्र० ॥ वनिता धरिय विवेक रे ॥ ज० ॥ सरखी साहेलियें परवरी ॥ व्र० ॥ समकितनी घणी टेक रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ अस्तिक पीठनी उपरें ॥व्र०॥ अनुजव मुक्ता श्वेत रे ॥ ज० ॥ चिहुं गति चूरण साथीयो ॥ व्र० ॥ वधावती धरी हेत रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ गुणवंती गावे गहूंअली ॥ व्र० ॥ मुनिगुणमणि धरि हाथ रे ॥ ज० ॥

श्रीशुजवीरनी देशना ॥ प्र० ॥ सुणतां मले शिवसाथ रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ गहूंली साडत्रीशमी ॥

॥ केसरिया चडो वरघोडे ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही घनखंम विचाल, आव्या वीरजिणंद दयाल, वंदे श्रेणिकनामें जूपाल तो ॥ वीर जगतगुरु वंदना करियें ॥ वंदना करियें ने जवजल तरियें तो ॥ वी० ॥ १ ॥ कुष्टि कुरूप एक देव ते वार, मरण जीवन जन चार विचार, श्रेणिकरायने हर्ष अपार तो ॥ वी० ॥ २ ॥ कोसंबी नगरीनो वासी, सेडूक ब्राह्मण धननो आशी, पुत्र कुटुंबने रोगें वासी तो ॥ वी० ॥ ३ ॥ आवे राजगृही डुवार, मरण लही जल तरश अपार, जलमां मेडकनो अवतार तो ॥ वी० ॥ ४ ॥ वारी हारी नारि वचनथी, पूर वत्तव लहि चाल्यो वनथी, मुज वंदन इरख्यो तन मनथी तो ॥ वी० ॥ ५ ॥ तुरु घोटक पद हणियो जाम, लहि सुर जव आव्यो एणें गम, श्रेणिक देखे तुरु परिणाम तो ॥ वी० ॥ ६ ॥ मोक्षगमन कह्यो मुजने सार, दर्दूर रंक तणो अधिकार, उपदेशमाला ग्रंथ मोकार तो ॥ वी० ॥ ७ ॥ राणी

चेलणा हर्ष न मावे, मुक्ताफलशुं गहूंली बनावे,श्री शुभवीर जिणंद वधावे तो ॥ वी० ॥ ८ ॥ ३७ ॥

॥ अथ गहूंली आडत्रीशमी ॥

॥ द्वारका नगरी दीपती ॥ जिन वंदीयें ॥ वसे जादव कुलनो परिवार ॥ रे जिन वंदीयें ॥ जिनजी ते आवी समोसर्या ॥ जि० ॥ साथें गणधर वर अढार ॥ रे जि० ॥ १ ॥ अढार सहस साधु भला ॥ जि०॥ ते तो लब्धि तणा रे भंडार ॥ रेजि० ॥ समवसरण देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां बेठी पर्षदा बार ॥रेजि०॥ ॥ २ ॥ कृष्णजी वांदवा आविया ॥ जि०॥ साथें अंते उरनो परिवार ॥ रे जि० ॥ गहूंली ते करे मन रंग शुं ॥ जि० ॥ सत्यभामा रुक्मिणी नार ॥ रेजि० ॥ ॥३॥ पट्टेरी पटोलां दाडमी ॥जि०॥ पाये कांकरनो ज मकार ॥ रेजि० ॥ मुक्ताफलनो साथीयो ॥ जि० ॥ पांच रतन्न ते पंचाचार ॥ रेजि० ॥ ४ ॥ लली लली लेती लूंछणां ॥ जि० ॥ जिनमुखडां जूवे रे निहाल ॥ रे जि० ॥ कृष्णजीयें प्रभुजीने पूछियुं ॥ जि० ॥ मुज श्रम चड्यो रे अपार ॥ रेजि० ॥ ५ ॥ प्रभुजी कहे श्रम उतर्यो ॥ जि० ॥ तमें कारज कर्युं मनो हार ॥ रेजि० ॥ सातमीनी त्रीजी करी ॥ जि० ॥

तमें समकित नमो निर्धार ॥ रेजि० ॥ ६ ॥ रोम रोम हर्षित हुआ ॥ जि० ॥ प्रभु तार तार मुज तार ॥ रेजि० ॥ न्यायसागर प्रभु नीरखतां ॥जि०॥ तमे जय जय जणो नर नार ॥ रेजि० ॥ ७ ॥ इति ॥३८॥

॥ अथ गहूंली छंगणचालीशमी ॥

॥ आर्यदेश नरभव लह्यो रे, श्रावक कुल मनोहार रे ॥ जिननी वाणी नित्य सुणे रे, धन्य तेहनो अवतार ॥ गुरुने वोलडीये,मोह्या मोह्या रे त्रिभुवन लोक ॥ गुरुने वोलडीये, ॥ १ ॥ उठी सवारें प्रभु नमे रे करे नवकारसी सार रे ॥ शोल शणगार सर्जी करीने, आवे गुरु दरवार ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ करीने, वांदी बेसे ठाय रे ॥ उभ हाथ अलगी रहिनें, गहुंली पूरवा जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ चिहुंगति दुःख निवारवा रे, माहामंगल उच्चार रे ॥ आठ मंगल मांडे वडो ने, साथीयो कीजें उदार ॥ गु० ॥ ४ ॥ व .ावे गुरुरायने रे, पछें करे पचारकाण रे ॥ लूंछणीयां लटके करे ने, भाव भलो मन आण ॥ गु० ॥ ५ ॥ आगम अर्थने धारती रे, करती विनय विशेष रे ॥ एम आतमने तारती रे, सौभाग्यलक्ष्मी सुविशेष ॥ ॥ गु० ॥ ६ ॥ इती ॥ ३९ ॥

॥ अथ गहूंली चालीशमी ॥

॥ रूमी रे राजगृही उद्यानें, पंचसया मुनिमान हो ॥स्वामि॥ आवीया गुरु गोयम स्वामी ॥ वनपालें जई राय वधाव्या, हर्षे वधामणी लाया हो ॥ स्वा० ॥ ॥ आ० ॥ १ ॥ आव्या वीरतणा आदेशी, कश्यें केवा केशी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक अंतेउर सहु लेई, जीत नगारां गेडी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ चेडा रायतणी तस बेटी, चेलणा गुणमणि पेटी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक रायतणि पट राणी, वीरें आप वखाणी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ३ ॥ साथीयडो कीधो लटकालो, मंगल रंग रसाल हो॥स्वा० ॥ आ० ॥ लळि लळि गुरुजीने लूंछणां करती, की तिनां दानज देती हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ देशना सांभळी आनंद पामी, धर्म यथोचित राग्यो हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ उपगारी गुरुना गुण गाती, समकित रतनने चढामी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ श्री पासतणीपरें लग्ने, शिव रमणी सुख वरसे हो ॥ स्वा० ॥ आ०॥ जे कोई गहूंली एणी परें करशे, मुक्ति ताणां सुख वरशे हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहुंली एकनाळीशमी ॥

॥ मोहन मामी परंपरा ॥ सुखकारी रे साहेब जी॥ मुनिगुणरत्न भंडार रे । वाहलो मारो एही रे साहेब जी ॥ सूरि छत्रिश गुणे शोभता ॥सु०॥ धरता माहाव्रत सार रे ॥ वाहलो० ॥ १ ॥ पंचेंद्रिय संवरपणे ॥सु०॥ नवविध ब्रह्मचर्य धार रे ॥ वा० ॥ पंचाचारज पाळता ॥ सु० ॥ टाळे क्रोधादिक चार रे ॥ वा० ॥२॥ समिति गुप्ति निजशुद्धता ॥ सु० ॥ षटकायिकप्रतिपाल रे ॥ वा० ॥ एहवा गुरुपद सेवीयें ॥ सु० ॥ पामीयें मंगलमाल रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ विहार करंता आवीया ॥ सु० ॥ मुंबई बंदर मझार रे ॥ वा० ॥ संघ सकल अति भावशुं ॥ सु० ॥ सेवा करे नर नार रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ अचल गच्छपति दीपता ॥ सु० ॥ रत्नसागर सूरिराय रे ॥ वा० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणमतां ॥सु०॥ संघने कल्याण थाय रे ॥वा०॥५॥इति ॥४१॥

॥ अथ गहुंली बेंतालीशमी ॥

॥ आवो हरि लासरिया वाला ॥ ए देशी ॥

॥ चालो सखि वंदनने जइयें, वंदीने पावन थइयें ॥ चालो० ॥ ए आंकणी ॥ माता जिनधाना जाया, धर्म धुरंधर कहेवाया, गुणशील वनमांहे आया

॥ चालो० ॥ १ ॥ शोभा श्री चरणवर्ते पद्देनी, त्रिभुवनमां कीर्त्ति जेहनी, बलिहारी जाउं हुं पहनी ॥
॥ चालो० ॥ २ ॥ छाजे केवल ठकुराइ, सादि अनंत गुण पाइ, गणधर आगममां गाइ ॥ चालो० ॥ ३ ॥
सुरकोडी सेवा करता, चंगणीश अतिशय अनुसरता, भावें भवसायर तरता ॥ चालो० ॥ ४ ॥ चौद हजार मुनि संगें, धारक चरण करण रंगें, शील स न्नाह धर्या अंगें ॥ चालो० ॥ ५ ॥ श्रेणिक चेल णा सहु आवे, मुक्ताफल चरीने लावे, मंगल आर करी गावे ॥ चालो० ॥ ६ ॥ गातां दुःख दोहग भांजे, मंगल महिमंगल काजे, इम कहो हीर क विराजे ॥ चालो० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४२ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेंतालीशमी ॥

॥ वाडीना भमरा,द्राख मिठी रे चांपानेरनी॥ए देशी॥
॥ जीरे कामनी कहे सुणो कंथ जी, जीरे फलिया मनोरथ आज रे ॥ नणदीना वीरा गणधर आव्या छे चालो वांदवा ॥ जीरे भवोदधि पार उतारवा जीर तारण तरण जहाज रे ॥ न० ॥ १ ॥ जीरे गुणशील चैत्य समोसर्या, जीरे वीरतणा छे पटोधार र ॥
जीरे पांचशें मुनि परिवार छे, जीरे तारवा



र रे ॥ न० ॥ २ ॥ जीरे कंचन कामिनी परिहख्यां, जीरे प्रगट्या ठे गुण वीतराग रे ॥ न० ॥ जीरे परिसहनी फोजने जीतवा, जीरे कर धरी उपशमखड्ग रे ॥न०॥ ३ ॥ जीरे प्रवचन मातने पालता, जीरे समिति गुप्ति धरनार रे ॥ न० ॥ जीरे मेरुगिरि सम मोटका, जीरे पंचमहाव्रत भार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ जीरे सुरपति नरपति जेहने, जीरे दोय कर जोडी हजूर रे ॥ न० ॥ जीरे अमृतसमी गुरुनी देशना, जीरे पाप पम्ल होये दूर रे ॥ न० ॥ ५ ॥ जीरे कामिनी वयण रे मीठडां, जीरे वांद्या ठे गुरु गणधार रे ॥न०॥ जीरे गुरुमुखथी सुणी देशणा, जीरे आनंद अंग अपार रे ॥न०॥६॥ जीरे मुक्ता ने रयणें वधावती, जीरे गहूंली चित्त रसाल रे ॥न०॥ जीरे निजभव सुकृत संभारती, जीरे जेहना ठे भाव विशाल रे ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ जीरे दीपविजय कविराज जी, जीरे पृथ्वीनंदन वखिहार रे ॥ न० ॥ जीरे गौतम गणधर पूज्य ज, जीरे वीरशासन शणगार रे ॥न०॥८॥ इति ॥ ४३॥

॥ अथ गहूंली चुम्मालीशमी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सुरिजन विचरंता वसुधा तलें, राजग्रही उद्यान

निमय कीर्ति थेशी एम सानरी, शासन शक्ति दिशा
या है, अलबेली हेली ॥ सुरिजन प्रभुनी वाणी अमृत
सरीखी भरे, रंगे सुणीयें रसाल हे, अलबेली हेली
॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥ अथ गहुंली पीस्तालीशमी ॥

॥ सुण गोरी साहेली, गोरस हावाली रे उनी रहेने ए देशी
॥ सुण साहेली, जंगम तीरथ जोवा उनी रहेने ।
मुनि मुख जोतां, मन उलसे तन विकसे आपण बे
ने ॥ ए आंकणी ॥ थावर तीरथ दुर्गति वारे, प
ण पर मेली जइयें त्यारें, त्रिविधयोगें ध्यान धरे त्या
रें, संसार समुद्रथकी तारे ॥ सुण० ॥ १ ॥ जंगम
मुनि मारगमां फरता, संयम आचरणा आचरता,
जगजीव उपर करुणा धरता, पुण्यशाली घर पावन
करता ॥ सुण० ॥ २ ॥ अनाचीरण बावन परिहर
ता, थोसे दशवैकालिक करता, गणि पेटी बहु श्रुत
नी धरता, मुखचंद्रथकी अमृत झरता ॥ सुण० ॥
॥ ३ ॥ वर ज्ञान ध्यान हय गय वरिया, तप जप च
रणादिक परिकिरिया, विरति पटराणीशुं वरीया, मु
निराज सवाइ केशरीया ॥ सुण० ॥ ४ ॥ सुविहित
गीतारथ गुरु आगें, त्रिविधयोगें वंदे गुणरागें, कर

कंकण पग फांजर वागे, गहूंली करतां अनुजव जा
गे ॥ सुण० ॥ ५ ॥ कुंकावटीयें केशर लेती, करी स्व
स्तिक पातकडां धोती, वधावती उज्ज्वल मोती,वल
ती सलती गुरुमुख जोती ॥ सुण० ॥ ६ ॥ कलकंठ
वती मधुरा रावे, गुणवंती तिहां गहूंली गावे, आ जव
सौजाग्यपणुं पावे, शुजवीर वचन हेयडे जावे॥सुरे॥७

॥ अथ अगीयार गणधरनी गहूंली छेंतालीशमी ॥

॥ जनक रायने रे मांमवे ॥ ए देशी ॥

॥ पहेलो गोयम गणधरु, इंद्रजूति जेहनुं छे नाम॥
अग्निजूति वखाणीयें, बीजो प्रजुगुण धाम ॥ गणधर
शोजा हुं शी कहुं ॥ए आंकणी ॥१॥ वायुजूति त्रीजा
वजीर छे,गौतमगोत्र जगवंत॥चोथा व्यक्तजी जाणीयें,
कीधा जवना रे अंत ॥ गण० ॥ २ ॥ स्वामी सुध
र्मा छे पांचमा, मंमित छठा गणधार ॥ मोरिय पुत्र
छे सातमा, सहु ए जगना आधार ॥ गण० ॥ ३ ॥
अकंपितजी छे रे आठमा, अचलजी नवमा रे जाण॥
मेतारय जग पूज्य जी, गणपति दशमो वखाण
॥ गण० ॥ ४ ॥ स्वामी प्रजासजी वंदीयें, एकादश
मा गणधार ॥ गणधर गछपत्ति गणपति, तीरथ
ना अवतार, द्वादशांगी धरनार, सहु मुनिना

शिरदार, पाम्या जयनो रे पार, नामें जय जयकार, थंदो पार हजार ॥ गण० ॥ ५ ॥ आणा लेइ प्रभु वीरनी, सज्जनने सुखदाय ॥ गुणशीला चैत्य पधारीया, श्रेणिकवंदन आय ॥ अमृतवाणी सवाय, निसुणी हर्षे न माय, सुणतां मनडां लोजाय ॥ गण० ॥ ६ ॥ चेलणा पूरे रे गहूंअली, सहीयर गावे छे गीत ॥ दीपविजय कविराजनी, ए जिनशासन रीत ॥ गण० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ गहूंली सुडतालीशमी ॥

॥ गछ राया रे ॥ ए देशी ॥

॥ चित्त समरुं सरसति माय रे, वली वंदूं सद्गुरु पाय रे, हुंतो गाइश तपगछ राय रे ॥ गछ राया रे ॥ १ ॥ छत्रीश गुणें गुरु राजे रे, गौतम गणधर पट छाजे रे, गुरु पंचाचार दीवाजे रे ॥ गरे ॥ २ ॥ गुरु सारण वारण दाता रे, जिनराज सदा मन ध्याता रे, गुरु संयम धर्ममें राता रे ॥ गरे ॥ ३ ॥ गुरु पंच महाव्रत पाले रे, गुरु आतम तत्त्व संजाले रे, गुरु जिनशासन अजुआले रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ जेणे दृष्टि निहाली रे, गुरु देशना दे लटकाली रे, गुरु प्रतपे कोडि दीवाली रे ॥ ग० ॥ ५ ॥ गुरु मधु

द्दारा गुरुजीनी जाख ॥ म० ॥ ११ ॥ जीरे एकचित्तें जे सांजसे, जीरे पामे ते जवपार ॥ म० ॥ जीरे नित्य नित्य रंग वधामणां, जीरे सुख पामे संसार ॥ म० ॥ ॥ १२ ॥ जीरे ह्वीररतन सूरि राजीया, जीरे तपगछ केरा राउ ॥ म० ॥ जीरे श्रमें श्रमारा गुरुजीने गा यशुं, जीरे न गमे ते उठीने जाउ ॥ म० ॥ १३ ॥ जीरे दानशीयल तप जावना, जीरे जे सुणे ए जि नवाणी ॥ म० ॥ जीरे उदयरतन मुनि एम कहे, जीरे ते लहे कोडि कल्याण ॥ म० ॥ १४ ॥ इति गहूंली ॥४ए॥

॥ अथ गहूंली पचासमी ॥ गरवानी देशी ॥

॥ वेनी राजगृही उद्यान के, वीर प्रजु श्राविया रे लोल के ॥ वेनी समवसरण मंमाण, रचे सुरवर तिहां रे लोल ॥ वेनी चार निकायना देव, मली तिहां श्रा विया रे लोल ॥ वेनी परखदा वेठी वार, सुणे प्रजु देशना रे लोल ॥ १ ॥ वेनी सोहम गणधर मुनि राय के, नर नारी मली रे लोल ॥ वेनी चौद सहस परिवार के, श्रावी परवस्या रे लोल ॥ वेनी श्रेणिक राय प्रमुख, वंदन मन जावियां रे लोल ॥ वेनी राणी चेलणा नार, जरि थाल वधावीया रे लोल॥२॥ वेनी गुरुमुख जोती सार के, मनमां गह गहे रे

वियण कर जोड. करी एक वीनतिरे लोल के॥वेनी चंद्रोदयरत्नसूरिंदने, नित्य नित्य वंदनी रे लोल॥७॥

॥ अथ गहुंली एकावनमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ वेनी गुरु गणपति गुरुराज के. गोतम जाणीयें रे लो० ॥ वेनी मुनि मंडल महाराज के. मनघर आणीयें रे ॥ लो० ॥ १ ॥ वेनी शासनना सुलतान, वजीर श्री वीरना रे॥ लो० ॥ वेनी लब्धिवंत निधान, के श्रीगुण हीरना रे ॥ लो० ॥ २ ॥ वेनी मगधदेश मकार के. गोवरगाम ते रे ॥ लो० ॥ वेनी वसुभूति पृथिवी नार के, माता नाम ते रे ॥ लो० ॥ ३ ॥ वेनी सोवन वान समान, शरीर सकोमल रे ॥लो०॥ वेनी लोचन युगल प्रधान के. कर कम [illegible] रे ॥ लो० ॥ ४ ॥ वेनी ज्ञान रयण भंडार [illegible] सागर रे ॥ लो० ॥ वेनी माहात्म्य [illegible] महिमा गुणआगरु रे ॥ लो० ॥ ५ ॥ [illegible] प्रतिबंध विहार. नहीं इच्छा करी रे ॥ लो० ॥ वेनी सकल जंतुहितकार, दया सम मन धरी रे ॥लो० ॥ ६ ॥ वेनी नयरी चंपा उरवस के, गुरु पधारीया रे ॥ लो० ॥ वेनी श्रेणिकसुत धनधन्य के. वंदन पधारिया रे ॥ [illegible] ७ ॥ वेनी देशना दीये गुरु

राय, भविक प्रतिबोधता रे ॥ सो० ॥ बेनी प्रद
छठी प्रणमुं पाय, समिति पंच शोधता रे ॥ सो० ॥
॥८॥ बेनी कोणिक भूपति नार के, गहूंली लावती
रे ॥सो०॥ बेनी स्वस्तिक पूरति खास के, मोतीयें व
धावती रे ॥ सो० ॥९॥ बेनी कामिनी कोकिलवाणि
के, गुरुगुण गावती रे ॥सो०॥ बेनी सौभाग्य लक्ष्मी
सुखखाण, के,सदा सुख पावती रे ॥ सो० ॥ बेनी गुरु
गछपति गुरुराज के, गौतम जाणीयें रे सो० ॥ १०॥

॥ अथ गहूंली बावनमी ॥

॥गरबानी देशीबेनी अपापा नयरी उद्यान के,वाजां वा
गियां रे सोल॥बेनी देववाजिंत्र अनेक के, घनाघन गा
जीयां रे सोल॥१॥बेनी इंद्रभूत्यादि अग्यार के, ब्राह्म
ण दीपता रे सोल ॥ बेनी वेदवादना जाण के, बहु वा
द जीपता रे सोल ॥२॥ बेनी संशय छे अति गूढ,
मिथ्यामति पूरिया रे सोल ॥ बेनी श्रीजिन अमृत
वाणी के, सुणि सुख पामीया रे सोल ॥ ३ ॥बेनी
छांडी सकल जंजाल के, हुवा व्रत भाविया रे सोल॥
बेनी इंद्र सजानो थाल, केवा जश आविया रे सोल
॥४॥ बेनी अरिहा ए आचार के, तीरथ स्थापिया
रे सोल ॥ बेनी लावो गहूंली गेल के, हरखें वधा

विया रे लोल ॥ ५ ॥ वेनी वधावो श्री जिनराज, करो नित्य नामणां रे लोल ॥ वेनी गार्ड संगल गीत के, लीजें वारणां रे लोल ॥६॥ वेनी वांधो तोरण वार के, सुरतरु मालिका रे लोल ॥ वेनी गार्ड मंगलगीत के, मली वहु वालिका रे लोल ॥७॥ वेनी गौतम केवलज्ञान के, सोहम गच्छधणी रे लोल ॥ वेनी श्रापी जंबूने पाट के, पद्दोता शिवमणि रे लोल ॥ ८ ॥ वेनी करतां एहनुं ध्यान के, लहीयें जश घणा रे लोल ॥ वेनी विबुध कहे श्रीवीरने, सहु जय जय नणो रे लोल ॥ ए ॥ इति ॥ ५२ ॥

॥ श्रथ गहूंली त्रेपनमी ॥

॥मुनि पंचम गणधर वीरना रे॥मुनि वंदीयें ॥ साथें पांचशें मुनि गुणधाम रे ॥ गुरु वंदीयें ॥ राजगृही उद्यानमां रे ॥ मु० ॥ गुरु समवसख्या शुन ठाम रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच माहाव्रत पालता रे ॥ मु० ॥ दशविध संयतिनो धर्म रे ॥ गु०॥ संयम सत्तर प्रकारथी रे ॥ मु० ॥ लही पाले तेहनो मर्म रे ॥ गु० ॥ ॥ २ ॥ दश प्रकार विनय नलो रे ॥ मु० ॥ ब्रह्मचर्य नववाडें युक्त रे ॥गु०॥ रत्नत्रयि श्याराधता रे ॥मु०॥ वार नेदें तपमां रक्त रे ॥गु०॥ ३ ॥ क्रोध मान माया

सोजनें रे ॥ मु० ॥ ऊंपता करे उग्र विहार रे॥गु०॥ चरणसित्तरी पालता रे ॥ मु० ॥ तिम करणसित्तरी सार रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ वंदनहेतें आविया रे ॥ मु० ॥ राय श्रेणिक बहु परिवार रे ॥ गु० ॥ चेलणा लावे गहूंश्रली रे ॥मु०॥ घाट शील पहेरी मनोहार रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ आजूपण सत्यवचननां रे ॥ मु० ॥ करे स्वस्तिक विनय प्रधान रे ॥ गु० ॥ श्रद्धा अक्षत था पती रे ॥ मु० ॥ करे लूठणां सुप्रणीधान रे ॥ गु० ॥ ॥ ६ ॥ देशना सांजले हर्षेशुं रे ॥मु०॥ कहे धन धन तुम गुरुज्ञान रे ॥गु०॥ उत्तम गुरुपद पद्मनी रे ॥मु०॥ सेवा करतां लहे शिवठाण रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ ५३ ॥

॥ अथ गुरु आगल गहूंली चोपनमी ॥

॥ तमें पीतांबर पेर्यां जी,मुखने मरकलडे ॥ ए देशी॥

॥ चेलणा लावे गहूंली ॥ गुरु ए रूडा ॥ श्रेणिक नृप घरनार ॥ सजनी ए रूडा ॥ सोहम स्वामी समोस र्या ॥ गु० ॥ प्रभु पंचम गणधार ॥ स० ॥ १ ॥ ठ त्रीश ठत्रीशी गुणें ॥ गु० ॥ शोजित पुण्य पवित्त ॥ स० ॥ आगमवयण सुधारसें ॥ गु० ॥ वरशी गारे चित्त ॥ स० ॥ २ ॥ पडिरूवादिक चौद ठे ॥ गु० ॥ खांत्यादिक दश धर्म ॥स०॥ बारह जावना जाविया

॥ गु० ॥ एह ब्रत्रीशी मर्म ॥स०॥३॥ दंसण नाण चरण तणा ॥ गु० ॥ तप आचारें युक्त॥स०॥ क्रोधादिक चिहुं परिहरे ॥ गु० ॥ पंचेंद्रिय त्याग प्रयुक्त ॥ स० ॥ ४ ॥ नवविध तत्वनी देशना ॥ गु० ॥ नव कल्पी उग्र विहार ॥स०॥ नव नीयाणां परहरयां ॥ गु० ॥ नव वाडें व्रत धार ॥ स० ॥ ५ ॥ आतम वा जोड उपरें ॥ गु० ॥ समकेत साथियो पूर ॥ स० ॥ मूल उत्तरगुण गहूंअली ॥ गु० ॥ उपशम अद्भुत नूर ॥ स० ॥ ६ ॥ कोकिल कंठें कामिनी ॥ गु० ॥ सोहव गावे गीत ॥ स० ॥ माणक मोती लूंछणां ॥गु०॥ श्री जिनशासन रीत ॥स०॥ ७ ॥ इति॥५४॥

॥ अथ समवसरणनी गहूंली पचावनमी ॥

॥ श्रावण वरसे रे स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजल सजनी रे महारी, समवसरणनी शोजा सारी॥प्रथम गढ रूपानो राजे, सोवन कोसीसां तस ढाजे ॥ सांजल० ॥ १ ॥ बीजो कंचननो गढ निरखो, रत्न कोसीसां जोइ जोइ हरखो॥त्रीजो रत्न तणो गढ सोहे, मणि कोसीसें मनडुं मोहे ॥ सां० ॥ २ ॥ जुगतें सुरवर रे जडीयां, वीश हजार जेहनां पावडीयां ॥ मध्यें रत्न पीठ मनोहार, जडित सिंहासन

सोहे अपार ॥ सां० ॥ ३ ॥ तखतें राजे श्रीवर्द्धमान, जाणे अभिनव उदयो भाण ॥ देव दुंदुभि नादें गाजे, वाजित्र कोडि गमे तिहां वाजे ॥ सां० ॥ ४ ॥ सुगंध पाणी परिमल पूर, वरसे पंच वरणनां फूल ॥ जाणे वसंत ऋतु बहु फूली, भ्रमरा कुसुम कुसुम रसा फूली ॥ सां० ॥ ५ ॥ थै थै नाचे सुरवधू बाला, गावे गीत सुकंठ रसाला ॥ चहुं दिशि चामर रे ढल के, मणिमुक्ताफल तोरण झलके ॥ सां० ॥६॥ शिर पर छत्र अनोपम सार, पुठें भामंडल तेज अपार ॥ बेठी पर्षदा रे बार, वाणी वरसे जिम जलधार ॥ सां० ॥ ७ ॥ राजा श्रेणिकनी राणी, नामें चेलणा गुणनी खाणी ॥ कुमकुम चंदन रे घोली, करती ग हूंली भामिनि भोली ॥ सां० ॥ ८ ॥ ललि ललि नम तीं रे भावें, मुक्ताफलशुं वीरने वधावे ॥ हसि हसि जिनमुख रे जोती, जाणे भवदुःखडांने खोती ॥ सां० ॥ए॥ एणी परें जे कोइ गहूंली करशे, पुण्य पनोती भवजल तरशे ॥ कीर्त्ति गुरुनी रे गावो, माणक शिव सुख वेगें पावो ॥ सां० ॥ १० ॥ इति ॥ ५५ ॥

॥ अथ गहूंली छप्पनमी ॥

॥ वर अतिशय कंचन वाने, राजगृही नयरी उद्या

ने हो ॥ धन धन मुनिराया ॥ आवीया गुरु स्वामी, सुर असुर नमे शिर नामी हो ॥ धन० ॥१॥ ज्ञानादिक गुण मणि जरीया, उपशम रस केरा दरीया हो ॥ धन० ॥ मुनि पंचसया परिवारें, जे आप तस्या पर तारे हो ॥ धन० ॥ २ ॥ आव्या जाणी चउनाणी, श्रेणिक नरपति पटराणी हो ॥ धन० ॥ चेलणा नामें गुण पेटी, चेटक माहाराजनी बेटी हो ॥ धन० ॥ ३ ॥ आवे गणधर वांदवा, गुरू समकेत लाज लहेवा हो ॥ धन० ॥ करे स्तुति नित्य कर जोडी, दुर्दम मद आठने मोडी हो ॥ धन० ॥४॥ करे कुंकुम स्वस्तिक मोती, वधावे पुण्य पनोती हो ॥ धन० ॥ करे सुवणां गुरुमुख निरखी, हैयडामांहे घणुं हरखी हो ॥ धन० ॥ ५ ॥ निसुणी सद्गुरुनी वाणी, मीठी जे अमिय समाणी हो ॥ धन० ॥ रे निर्मल समकित करणी, धरे पद्दोनी समकित धरणी हो ॥ धन० ॥ ६ ॥ एम शासन सोह वधारो, करो नवियण सफल जमारो हो ॥ धन० ॥ ध्यावे अविनाशी निज राम धन० ॥ ७ ॥ इ

॥ अथ गहूंली सत्तावनमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी॥

॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नामें सोहम स्वामी, नविकमन नावियां ॥ विषय प्रमाद कषाय, हास्यादिक तजी॥ रमता आतमराम के, निजपरीणति नजी ॥१॥ नीरागी नगवान, करे शुन देशना ॥ उपकारी असमान के, तारे नविजना ॥ सुणवा जिनवर वाण, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारीना थोक के, हर्षे मनें बहु ॥ २ ॥ वसन आनूषण मत, तणा अंगें धरे ॥ कोणिक नूपति नार, हवे गहूंली करे ॥ समिति गुप्ति सद्दियरनी, सार्थें आवती ॥ आत्म असंख्य प्रदेश, रकेवी लावती ॥ ३ ॥ श्रद्धाकुंकुम घोली, स्वस्तिक करे नावथी ॥ आतम पीठनी उपर, जिनगुण गावती ॥ विनयवती बहुमानथी; इम गहूंली करे, अनुनवनां करि लुंठणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥ इव्यनावथी एणी परें, जे गहूंली करे ॥समकितवंती श्राविका, नव सायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजना, गुण सखी मन धरो ॥ पामी मनुज अवतार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ ५७ ॥

॥ अथ गहूंली अठावनमी ॥

॥चरण करणगुण आगरु रे ॥गणधर॥गिरूआ गोतम स्वाम ॥ सुहावो गहूंली रे ॥सुरगुरु सुरतरु सुरमणि रे ॥ गणधर ॥ प्रगटे जेहने नाम ॥ सु० ॥१॥ नयरी विशाला उद्यानमां रे ॥ गणधर ॥ वर्द्धमान वड शिष्य ॥ सु० ॥ चौद सहस्र अणगारमां रे ॥ ग०॥ तिलक समान जगीश ॥ सु० ॥ २ ॥ सुररचित कज उपरें रे ॥ ग० ॥ वेसी वरसे वयण ॥ सु० ॥ कन कचल चूला चढ्यो रे ॥ ग० ॥ पुष्कर जलधर अय न ॥ सु० ॥ ३ ॥ राणी चेलणा रायनी रे ॥ ग० ॥ काल जबूके कान ॥ सु० ॥ स्वामी वीरजिणंदनी रे॥ ग० ॥ चतुरा चंपकवान ॥ सु० ॥४॥ कुंकुम रयण क चोलडी रे ॥ ग० ॥ रजत रकेबी हाथ ॥ सु० ॥ [illegible] साथीयो रे ॥ ग० ॥ सात पांच सखी साथ ॥सु०॥५॥ पंचाचार उचारणे रे ॥ ग० ॥ वारू पंच रतन ॥ सु० ॥ जिनशासन मुनि दीपतो रे ॥ ग० ॥ कीजें कोडी जतन ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली ओगणशाठमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही रलीयामणी, जिहां गुणशीलचैत्य सुग

म ॥ साथण मोरी हे ॥ सहीयर मोरी हे ॥ वेहेन ड मोरी हे ॥ आवो सवाइ गुरु भेटवा, कांइ मेटवा कर्म कवोर ॥ सा० ॥ स० ॥ वे० ॥ आ० ॥ मुनि गणतारा चंद ज्युं, आव्या गणधर गौतम स्वाम॥ सा० स० ॥ वे० ॥ आ० ॥ १ ॥ जेह पंचेंद्रिय वश करे, वली पाले पंचा चार ॥ सा० ॥ जेह पंच समिति गुप्ति धोरी परें, वहे पंच महाव्रत भार ॥ सा० ॥ स० ॥ वे० ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाडें ब्रह्म धरे सदा, वली परिहरे चार कषाय ॥ सा० ॥ जे लब्धि अठावीशनो धणी, जयो आठ प्रभाविक राय ॥ सा० ॥ स० ॥ वे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ पहेरण पीत पटोलडी, ऊपर ओढण नव रंग घाट ॥ सा० ॥ कुंकुम रोल सुसाथीयो, करे अक्षत पूरी सुघाट ॥ सा० ॥ स० वे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वली ललि ललि कीजें लुंछणां, लेइ रजत कनकनां फूल ॥ सा० ॥ करो जिन शासन प्रभावना, वजडावो मंगल तूर ॥ सा० ॥ स० ॥ वे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ५९ ॥

॥ अथ गहूंली शाठमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ वाला राजग्रही उद्यान के, वीर समोसरया रे लोल के ॥ वाला मलिया चोशठ इंद्र के, बहु परि वारशुं रे लोल के ॥ वा० ॥ १ ॥ वाला वधामणी

माहाराजनी, श्रेणिक सांजली रे लोल के ॥ वाला श्रेणिक पुर जन लोक के, सौ मली एकठां रे लोल के ॥ वा० ॥ २ ॥ वाला वंदी बेठो नृप के, प्रजुजी आगलें रे लोल ॥ वाला चेलणा घूघट ताणी के, उठी मन गहगही रे लोल के ॥ वा० ॥ ३ ॥ वाला स्वस्तिक पूरी पास, वधावे मन रुली रे लोल के ॥ वाला लुठणां करे वारवार, सोहागण सहु मली रे लोल के ॥ वा० ॥ ४ ॥ वाला सजी शोले शणगार के, मली घणी वालिका रे लोल के ॥ वाला एणी परें जे जिन आगल, करे नित गहूंअली रे लोल ॥ वा० ॥ ५ ॥ वाला जाय सकल जंजाल के, नवोदधि डुःख हरे रे लोल के ॥ वाला कहे गौतम निरधार के, चित्त चोखे करी रे लोल के ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ पर्यूषणने विषे कल्पसूत्र पधरा ॥

॥ ववानी गहूंली एकशठमी ॥

॥जीरे ललित वचननी चातुरी, जीरे चतुर कहे गुरुराज॥ जीरे सुगुण सनेही सांजलो, जीरे पर्वप र्यूपण आज ॥ जीरे ललित० ॥ १ ॥ जीरे आश्रव जाव निवारीने, जीरे स्वजन सहित बहु मान ॥ जीरे कल्पसूत्र घर लावीयें, जीरे अठाइधर धरी

ध्यान ॥ जीरे ललित० ॥ २ ॥ जीरे दीपक अगर उखेविये, जीरे रात्रि जागरण नित्य ॥ जीरे पूजा विविध रचावीयें, जीरे त्रण दिवस इणि रीत ॥ जीरे ललित० ॥ ३ ॥ जीरे सुण सजनी रजनी गइ, जीरे कल्प धुरा परजात ॥ जीरे सहियर मली मंगल जपे, जीरे हय गय रथ मेलात ॥ जीरे ललित० ॥ ४ ॥ जीरे वरघोडे चली न्नातशुं, जीरे शुचि तनु पुस्तक हाथ ॥ जीरे इम मंमाणे आवीया, जीरे जिहां श्रुत निधि गुरुनाथ ॥ जीरे ललित० ॥ ५ ॥ जीरे गुरुसन्मुख लही वांचना, जीरे प्रमुदित पर्षदामांह ॥ जीरे इणि अवसर गजगति सती, जीरे मुनिपद नमत उत्साह ॥ जीरे ललित० ॥ ६ ॥ जीरे समकितवंती श्राविका, जीरे सहियर मली समदिठ ॥ जीरे अनुनव उज्ज्वल मोतीयें, जीरे स्वस्तिक लक्षण पीठ ॥ जीरे ललित० ॥ ७ ॥ जीरे स्वस्तिक पूरी वधावती, जीरे वेसती वेसणठाय ॥ जीरे पंच कल्याणक देशना, जीरे नव व्याख्यान सुणाय ॥ जीरे ललीत० ॥ ८ ॥ जीरे ठठ अठम तप जिन नमी, जीरे सांजलशे नर नारी ॥ जीरे श्री शुजवीरने शासने, जीरे करशे एक अवतार ॥ जीरे ललित० ॥ ए ॥ इति ॥ ६१ ॥

॥ अथ गहूंली बाशठमी ॥

॥ हाररो हीरो माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ जगगुरु जगचिंतामणि ॥ सहियर मोरी॥ जगबंधव जगत्रात हो ॥ द्धारिकां नगरी समोसस्या ॥सहि०॥ बावीशमा जगतात हो ॥ उलट आणी एतो, लाज ने जाणी एतो, पुण्यनी खाणी, शुद्ध श्राविका ॥ नवि तमे गहूंली करो मनरंग हो ॥ १ ॥ हरि वांदी नमी करी ॥ सहि० ॥ बेठा बे कर जोडी हो ॥ अमृतसम जिनदेशना ॥ सहि० ॥ सांजले मनने खोडी हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि०॥ ॥२॥ श्याम शरीरें शोजना ॥ सहि० ॥ तेज तणो नहि पार हो ॥ कचक घनी जिनराजनी ॥ सहि० ॥ विश्व मानस हितकार हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ३ ॥ धन्य धन्य राणी रुक्मिणी ॥ सहि० ॥ व्रत जूषण अंग हो ॥ तप सुघाट घूंटी समो ॥ सहि० ॥ चूनडी सुशील सुचंग हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ४ ॥ क्रिया कुंकावटी कर ग्रही ॥ सहि० ॥ जिनगुण कुमकुम घोल हो ॥ मननिर्मल जल जेलती ॥ सहि० ॥ चित्त उल्लमी मनरंग

री ॥ श्री सोहम गणधार हो ॥ आप स्वभावमां खे
लता, सहियर मोरी ॥ धरता ध्यान उदार हो ॥ सह
ज सोभगी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुभमति जागी
गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष उल्लास हो
॥ १ ॥ बारे भावना भावतां, सहियर मोरी ॥ अनि
त्यादिक गुणगेह हो ॥ माहाव्रत पामीने वली ॥ स
हि० ॥ भावे पणवीश तेह हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥
शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ २ ॥ संज्ञादिक योगें
करी ॥ सहि० ॥ सहस अढार जे थाय हो ॥ तेह
ने शील कही जियें ॥ सहि० ॥ ते पाले निर्माय हो
॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो०
॥ ३ ॥ समिति गुप्ति सूधी धरे ॥ सहि० ॥ चरण
करण गुण धाम हो ॥ पडिलेहण आवश्यकादिकें ॥
सहि० ॥ अहोनिश रहे सावधान हो ॥ सह० ॥ शिव०
॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ४ ॥ सदाचार एम
पालतां ॥ सहि० ॥ बनें आतमनाथ हो ॥ नयरी राज
गृही आविया ॥ सहि० ॥ भवोदधि तारण नाव हो
॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥
॥ ५ ॥ उदंत सुणीने आवियो ॥ सहि० ॥ वंदन श्रे
णिकराय हो ॥ सायें राणी चेल्लणा ॥ सहि० ॥ गहूं

ली करे गुण गाय हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुज० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ६ ॥ मनमोहन गुरु तिहां कणे ॥ सहि० ॥ देई देशना हितकार हो ॥ जाव ध रीनें जे सुणे ॥ सहि० ॥ ते लहे सुख श्रीकारहो ॥ सहज सोजागी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुज मति जागी गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष उल्लास हो ॥ ७ ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥ अथ गहूंली चोशठमी ॥

। जगजीवन जमुना रे, जल जरवा चो ॥ ए देशी

॥ आतमरुचि गुणधारणी रे, मनोहारणी ॥ करे गहूंथली तजी खेद रे ॥ सुखकारणी ॥ नाम स्थाप ना डव्यथी रे ॥ मनोहारणी ॥ जावे मंगल चिहुंनेद रे ॥ सुख० ॥ १ ॥ जीव अजीव ने मिश्रयी रे ॥ म० ॥ एतो नाम मंगल त्रिहु नाम रे ॥ सु० ॥ आपे मंग ल ए सही रे ॥ म० ॥ कीजें नित नित शुज काम रे ॥ सु० ॥ २ ॥ आगम नोआगमयकी रे ॥ म० ॥ ए तो डव्यमां होय विचार रे ॥ सु० ॥ जावमांहे होय ए वली रे ॥ म० ॥ तेह नोआगम अधिकार रे ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ नंदी दाखी सूत्रमां रे ॥ म० ॥ सही जाव मंगल होय तेह रे ॥ सु० ॥ पंच नाण निर्विमतां

रे ॥ म० ॥ ए तो मेरुनुं कारण सेहु रे ॥ सु० ॥ ४ ॥
[illegible] कह्यो ए जाणजो रे ॥ म० ॥ एतो [illegible]
[illegible] रे ॥ सु० ॥ [illegible] मैत्री करो रे ॥ म०
एतो गहुंअली जिनमत [illegible] रे ॥ सु० ॥ ५ ॥
[illegible] रे ॥ म० ॥ [illegible]
[illegible] रे ॥ सु० ॥ [illegible] आवरी रे ॥ म० ॥
[illegible] रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ [illegible]
जिनशासनें रे ॥ म० ॥ [illegible] रे ॥
[illegible] रे ॥ म० ॥ [illegible]
[illegible] रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ गहुंअली प्रारंभः ॥

॥ [illegible] ॥ ए देशी ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] रे ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] रे ॥ आ० ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] रे ॥ [illegible]
[illegible] रे ॥ आ० ॥ २ ॥
[illegible], [illegible] रे ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] रे ॥ आ० ॥ ३ ॥
[illegible], [illegible] रे, [illegible]
[illegible] रे ॥ आ०

॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाणथी, साधुनो पंथ सुरीतें रे ॥ तत्त्वातत्त्व विशेषणा, लहीयें परम प्रतीतें रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तत्त्वारथ श्रद्धान जे, समकित कहे जिनराया रे ॥ आपण रमण पणे लहे, भेद रहित मति पाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ स्वस्तिक पूजन भावना, करता भक्ति रसाल रे ॥ पुण्य महोदय पामीयें, केव ल ऋद्धि रसाल रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६५ ॥

॥ अथ गहूंली ६६मी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सजनी शासन नायक दिल धरी, गाशुं तपग छ राया हो ॥ अलवेली हेली ॥ सजनी जाणीयें सोह म गणधरु,पटधर जगत गवाया हो ॥ अलवेली हेली ॥सजनी वीर पटोधर वंदियें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ स जनी वसुधापीठने फरसता, विचरता गणधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ छत्रीश गुणशुं विराजता, छे भवि जनना आधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ २ ॥ स० ॥ तखतें शोहे गुरुराज जी, उदयो जिम जग भाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ निरखतां गुरुराजने, बूझे जाण अजाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ३ ॥ स० ॥ मु खडुं शोहे रे पूरण शशी, अणीयाळां गुरुनेण हो

॥ अ० ॥ स० ॥ जलधरनी परें गाजता, करता जनि
जन रीण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ४ ॥ स०
अंग उपांगनी देशना, वरसत अमृतधार हो ॥ अ०
स०॥ श्रोता सर्वेना दील ठरे, संयमशुं धरे प्यार है
॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ५ ॥ स० ॥ शुन शणगा
सजी करी, मोतीयडे नरी थाल हो० अ० ॥ स०
श्रद्धा वीरनी उपरें, पुरें गहुंली विशाल हो ॥ अ०
स० ॥ वी० ॥ ६ ॥ स० ॥ सोनाग्य उदयसूरि प
टना, धारक गुरु गुणराज हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्री
विजयवर्द्धी सूरिंद जी, दीपविजय कविराज हो
अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहुंली सडसठमी ॥

॥ कहीने रहीयाळी रे वाहलाजानारी ऋांगळी रे ए
देशी ॥ सुकृत करनी वेल वधारवा रे, शीशनी उलटा
उदकनी धार, गुरुगुण हृदय धरेभी प्यार, गाहुं
व्हालो अवतार ॥ सु० ॥ १ ॥ पुण्य वनोंभी रे सार्थ
साहेलीयों रे, मळी मळी साथ सजी शणगार,
कर धरी कनक रकेबी सार, कुंकुम घोळी करी मनो
हार ॥ सु० ॥ २ ॥ अक्षत सारा रे उज्वलता अम्ला
रे, पूरजी स्वस्तिकमंगल सार सुणी जिहुं गति क्षेत्र

ज चार, व्रती श्रीफल हर्ष अपार ॥ सु० ॥ ३ ॥ अनुनव रंगें रे मोती वधावती रे, ललित परिणामें नमती पाय, गुरुमुख देखी हर्ष न माय, सन्मुख वेसती वेसण गय ॥ सु० ॥ ४ ॥ नोजन पामे रे अमृत नूखमां रे, नागर ग्रीषम पाम्यो गंग, जिन वाणी सुणवानो रंग, अर्थ मनोहर नय गम नंग॥ ॥ सु०॥ ५ ॥ श्रीशुननवीरनुं शासन पामीने रे,धरती हैयडे समकितवास, अनुक्रमें केवलज्ञान प्रकाश, मलती मुक्ति सहेली पास ॥ सु० ॥६॥ इति ॥६७॥

॥ अथ गहूंली अडशठमी ॥

॥ देशी उपरली गहूंलीनी ॥ गिरिविनारें रे वीर स मोसस्या रे, चौद सहस मुनिवर संघाय, त्रिगडे वेगा त्रिनुवनराय॥ १ ॥ रूडीने रढीयाली रे जिनजीनी दे शना रे॥ ए टेक॥ वरसे जिम पुष्कर जलधार, सांजल वा वेठी परखदा बार॥ रूडी० ॥२॥ निजनिज नाषायें समजे सहू रे॥ जिम समजावी नीलें नार, योजन जिन वाणी उदार ॥ रूडी० ॥ ३ ॥ नय गम नंग प्रमाण निक्षेपथी रे॥जीवादिक नवतत्त्व विचार, उत्पाद व्य य ध्रुवथी धार॥ रूडी० ॥४॥ दान शीयल तप नाव ने दें फरी रे॥ चर्टनखथी नो जिनवर वाण, निसुणी पा

बत्रीश बद्ध नाटक रची सार, करी नर नारी रूप रसाल, खलके कंकणना खलकार, प्रभुने वंदे रे दर्दुं रांक सुर सार, ज्ञातासूत्रे रे वरणवियो अधिकार, समकित संगें रे मटे मिथ्यात्व निर्धार ॥ वी०॥ ३॥ चेलणा नारी मन हरखाणी, अंगें अनेक शणगार सोहाणी, बहुत साहेलीकी ठकुराणी, कुंकम घोली रे साथीयो रंग रसाल, रयणें पूरी रे वधावे नरी थाल, नेह धरीने रे गुण गावे उजमाल ॥ वी० ॥ ४॥ त्रिशला नंदन सूरिजन वंदों, अवसर लइ आ फंद निकंदो, पामे नित्य नवनवा आनंदो, बहु चिरंजीवो रे तीरथपति सुलतान, दिल नरी ध्यावे रे प्रभुगुण नुं घणुं मान, संपदा पामो रे लक्ष्मीसूरि गुण गाण ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥ ६ए ॥

॥ अथ गहूंली सीत्तेरमी ॥

॥ प्रभुजी आव्या रे शहेर नरुअचके मेदान, अश्व प्रतिबोध्यो रे जाणे पूरवको सयाण ॥ ए टेक ॥ कलके उगमते परनात, नूपति हरख्यो रे सांजल्यो अर्थीको काज, स्वामीजी वांद्या रे बहु फोजां के साज, नक्ति रागें रे जीव पामे शिवराज ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ उपदेश आपे त्रिभुवननाण, सुणे परखदा बारे वाण, मन

मां जाणे कोइ सुजाण, नृप पूछे रे मुनि सुव्रत जिनराय, प्रतिबोध्यो रे कोइ जीव एणे ठाय, देवे दीठो रे एक तुरंग धर्म ध्याय ॥ प्र० ॥ २ ॥ अणसण लेइ प्रभुके पाय, पहोतो सुरलोकें दिल लाय, तीरथ थापे मन उमाय, संघ सेवे रे दूरदेशथी आय, भावना भावे रे तजी विषय कषाय, दुःसम कालें रे ए महिमा गवराय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ नाटक नाचे नव नव रंग, करे अशुभ करमनो भंग, साचो समकित गुणनो रंग, सूत्रे दीसे रे सूरियाज सुरनो अधिकार, पूजा कीधी रे सतर भेद सुखकार, शंका टाले रे भविक जीव निरधार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पद्मावतीनो नंदन महाभाग, दाखे शिवगति पूरिनो माग, जगमांहे कहेवाये वीतराग, आठे रायो रे जिनशासन सुलतान, माग्या दीजें रे मनवंछित प्रभु दान, वांछा कीजें रे विध विमल शुभ ध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ गहूंली एकोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे गुणशीलवनके मेदान ॥ए देशी॥

॥ भवियण वंदो रे चोवीशमो जिनराय, सुगति आपे रे टाले कुगति कुठाय ॥ ए टेक ॥ पावन देशांतर करता स्वाम, विचरंता वली गामो गाम, पातक

जाये लीधे नाम, जग पडिबोहे रे ए त्रिहुं लोक नो नाथ, मुनि परिवार रे चउद सहस छे संघात, सायर छोडी रे कोण सेवे छीलर पाय ॥ जवियण० ॥ १ ॥ राजगृही नयरी उद्यान, गुणशीला चैत्यके मेदान, आया पुंमरिक प्रधान, सुर तिहां रचे रे स मवसरण तेणि वार, इंद्र इंद्राणी रे वंदे प्रजुने अपार, आनंद पावे रे देखी प्रजुनो देदार ॥ जवि०॥ ॥ २ ॥ वननो पालक जेहनुं नाम, दीधी वधामणि जइने ताम, श्रेणिक हरख्यो सुणीने नाम, चलचित्त थीयो रे मगधपति माहाराज, परिवार संयुक्त रे साथें रमणी समाज, तिहांथी चाल्यो रे प्रजुने वं दन काज ॥ जवि० ॥ ३ ॥ चतुरंगी सेना सजीय उ दार, गज रथ पायक अमुल तुखार, बहु जव उतर वाने पार, श्रेणिक हरखे रे वंदे प्रजुजीना पाय, प्रजुपद वंदी रे बेगो यथोचित गय, तव उपदेसे रे वीर जिनेसर राय ॥जवि०॥४॥ चेलणा राणी अति सोजागी, जिन वंदिने जक्ति जागी, गहूंली करवा रढ बहु लागी, कनक चोखा लइ रे हाथे अतिही रसाल गहूंली पूरे रे, जगपति आगें विशाल, मोतीडे वधावे रे, टाले पाप प्रजाल ॥ जवि० ॥ ५ ॥ देशना दीधी

श्रीजगवंत, शंशय टाल्या श्री अरिहंत, श्रेणिक वंदी पुर पहोचंत, एम वधावें रे नित्य नित्य मंगल गाय, सुकृत कमावे रे दीपविजय कविराय॥जवि०॥८॥इति॥

॥ अथ गहूंली वहोंतेरमी ॥

॥ जिनराज पूजी लाहो लीजीयें ॥ ए देशी ॥

॥केशरचंदन जरीय कुंकावटी,सोवनथाल ले कामिनी॥ गहूंयली करीने मंगल गाई, वलिहारी गुरुनामनी ॥ गहूंली करे रे गजगामिनी ॥ १ ॥ शोल शणगार सजीनें सुंदर, जाणे जबूके दामिनी ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जरी रे सजामां जामिनी ॥गहूंली० ॥ २ ॥ नवखंडी नवरंगी निरुपम, विधविधरंग व नावनी ॥ मोतीयें साथीया पूरे मनोहर, जक्ति करे शुज जावनी ॥ ग० ॥ ३ ॥ प्रवचन रचना जग [illegible]न पावन, देशाना श्रीगुरुरायनी ॥ धवल मंगल गां [illegible] गानें, सांजले सहु सुखदायिनी ॥ ग० ॥ ४ ॥ [illegible]तन वाचक उपदेशें, रूडी सजा रसरागनी ॥ प्रीते ते परमारथ पामे,वाणी श्रीवीतरागनी॥ग०॥ ५ ॥

॥ अथ गहूंली त्र्होंतेरमी ॥

॥सजनी मोरी गुणशीलवनके मेदान रे,सजनी मोरी आव्या श्रीवर्द्धमान रे॥ स० ॥ज्ञानादिक गुणदरी

या रे ॥स०॥ पतित पावन पीयरीया रे ॥ स० ॥ १ ॥
॥ ए आंकणी ॥ स० ॥ श्रेणिक हरख्यो आवे रे
॥ स० ॥ समकित क्षायिक जावें रे ॥ स० ॥ कंचन
वरणी नार रे ॥ स० ॥ पंचसया परिवार रे ॥ स०
॥ २ ॥ स० ॥ धर्मदेशना जिन जांखे रे ॥ स० ॥ न
वपद महिमा दाखे रे ॥ स० ॥ नवपद आतम जा
णो रे ॥ स० ॥ आतम नव पद वखाणो रे ॥ स०
॥ ३ ॥ स० ॥ नवतत्त्व जूपण सार रे ॥ स० ॥ रत्न
त्रयी उदार रे ॥ स० ॥ श्रवण मनन बहु मूल रे
॥स०॥ पहेरी वस्त्र अनुकूल रे ॥ स० ॥ ४ ॥ स० ॥
क्रिया कुंकावटी हाथ रे ॥ स० ॥ मन निर्मलने
पाथ रे ॥ स० ॥ जिनगुण कंकु घोली रे ॥ स० ॥
मली सहीयरनी टोली रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥
आणा तिलक धरावे रे ॥ स० ॥ चेतणा गहूंली
धनावे रे ॥ स० ॥ एणी परें गहूंली कीजें रे ॥ स० ॥
नरजव लाहो लीजें रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स० ॥
विषय ते विष सम जाणो रे ॥ स० ॥ चोंडे त्रएय
भुवननो राणो रे ॥ स० ॥ शिवपुर सासरें चालो रे
॥ स० ॥ सुजपमांहे माहालो रे ॥ स० ॥ ७ ॥
स० ॥ मणि उद्योत गुरु मलीया रे ॥ स० ॥ आज

मनोरथ फळिया रे ॥ स० ॥ शुं कहीयें वारो वार रे॥स०॥ ते कां करो परिहार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रनी गहूंली चम्मोतेरमी ॥

॥हांरे महारे ठाम धर्मना साडा पच्चवीश देश जो ॥ ए देशी ॥ हांरे माहारे जिनआणा लेइ इंद्रभूति गण धार जो, विचरे रे चउविह अप्रतिबंध विहारथी रे लो ॥ हांरे महारे संयम धारी मुनिगणना शिरदार जो, चउज्ञानी शुभध्यानी धर्मना सारथी रे लो ॥ १ ॥ हांरे महारे राजग्रही उद्याने आव्या नाथ जो, हरख्यो रे मगधाधिप त्रिकरण भावशुं रे लो॥ हांरे मारे आवे नृप चेलणादिक राणी साथ जो, अंग नमावी वंदे गणधर पावने रे लो ॥ २ ॥ हांरे महारे भवनिस्तरणी जिनवाणी उपदेश जो, भाखे रे प्रभु गोयमस्वामी रंगथी रे लो ॥ हांरे मारे सेवो भविजन सिद्धचक्र शुभ लेश जो, बहुसु ख पाम्यां मयणा तेहना संगथी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे अवसर पामी मगधाधिपनी नार जो, उ ल्लसी रे मन हर्षी स्वस्तिक पूरवा रेलो॥हांरे मारे स हियर मंगल गाती गीत अपार जो, मानुं भव भव संकटने ए चूरवा रे लो ॥ ४ ॥ हांरे मारे इणी

विध स्वस्तिक पूरे श्रद्धा पीठ जो, पामे रे ते मंगल माला माननी रे लो ॥ हारे मारे शिवपद कारण नावें जोग उकिठ जो, दीपकहे एम ए ठे वात नि दाननी रे लो ॥ ५ ॥ इति ॥ ७४ ॥

॥ अथ गहूंली पंचोतेरमी ॥

धोलनी देशीमां॥राजगृही उयानमां,श्रीसोहम ग णधार ॥ समोसरिया परिवारशुं, मुनिजनना आधा र ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु वांदवा ॥ ए आंकणी ॥ पंच महाव्रत पालता, दशविध यतिधर्म सार ॥ सत्त र नेदें संयम वखा, वेयावच्च दश धार ॥ चा० ॥२॥ गुप्ति धरे नववाडशुं, ज्ञानादिक तप वार ॥ निग्रह क्रोध तणो करे, चरणसित्तरि शणगार ॥चा० ॥३॥ पिंमविशुद्धि समिति धरे, नावना पडिमा धार ॥ इं डियरोधक पडिलेहणा, गुप्ति अनिग्रहधार ॥ चा० ॥ ४ ॥ करणसित्तरी ए पालवे, टाले सकल कलेश॥ कमलासने वेसी कहे, नविजनने उपदेश ॥ चा० ॥५॥ श्रेणिक नृपति मानशुं, प्रणमी पट्टोधर राय ॥ उचित अवग्रह ते साचवे,धर्म सुणे सुखदाय ॥चा० ॥६॥ गुणवंती करे गहूंअली, चतुरा चेलणानार ॥ माणक मोती वधावती, नरती सुकृत नंमार ॥ चा०

प्रमुख सुणी वंदन आवे, अंतरंग राणी गहूंली लावे ॥ उत्तम गुरुपद पद्म वधावे तो ॥ गो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एंशीमी कुमखडानी देशी ॥

॥ ज्ञानदीवाकर शोजता, श्रुतसागर मुनिराज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ मूकी काम विडंबना, कूखी संवल साज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ १ ॥ नहिं ममता सम ताधरा, शांत सुदंत महंत ॥ सु० ॥ पटपद वृत्ति आहारता, देश काल मतिमंत ॥ सु० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत जावना, जावंता पचवीश ॥ सु० ॥ पणवीश चित्त न धारता, अशुज जावन निश दीस ॥ सु० ॥ ३ ॥ शिवनारी रंजन जणी, पहेर्यो साधुनो वेश ॥ सु० ॥ ते आगल मृगलोचना, करती विनय विशेष ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधादिक चउ जीतवा, वरवा चार अनंत ॥ सु० ॥ स्वस्तिक पूरी वधावती, सफुरु चरण नमंत सु० ॥ ५ ॥ गावे सोहागण गहूंअली, धरती हर्ष अमंद ॥ सु० ॥ श्रीशुजवीर वचन सुणी, पामे पद महानंद ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ८० ॥

॥ अथ गहूंली एकाशीमी ॥

॥ अने हांरे सरसतीने चरणे नमी रे, वांडुं गुरुना पाय ॥ अखिय विघन सवि टखे रे, मागुं एक पसा

रूननी पटराणी, चउ मंगल प्रभु आगें ॥ पूरे स्व
स्तिक मुक्ताफलनो, चडवा शिवगति मार्गें॥ अमृत०
॥ ६ ॥ चउ अनुयोगी आतमदर्शी, प्रभुवाणी रस
पीजें ॥ दीपविजय कवि प्रभुता प्रगटे, प्रभुने प्रभुता
दीजें ॥ अमृत० ॥ ७ ॥ इति ॥ ०३ ॥

॥ अथ जंबुकुमारनी गहूंली चोराशीमी ॥

॥ घरडामें सहियो कूले हायणी ॥ ए देशी ॥

॥राजगृही नयरी समोसर्या, पांचशें मुनि परिवार
॥मोरी सहियां हो ॥ केवलज्ञान दिवाकर, श्री श्री
सोहम गणधार ॥ मोरी० ॥ चालो पट्टोधर गुरु वां
दवा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जंबुकुमर आवे हेजसु,
पूज्यजीने वंदन काज ॥ मोरी० ॥ ब्रह्मचारी शिर
सेहरो, लेवा मुक्तिगढ राज ॥ मोरी० ॥ चालो०
॥ २ ॥ गुरुमुखथी रे सुणी देशना, संयमें उल्लसित
थाय ॥ मो० ॥ क्षायिक समकितना धणी, मरघाने
चवजल दाय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ अनुमत लेइ
गुरु आगलें, संयमनो रे उजमाल ॥ मो० ॥ परणी
ने घरणी आठने, मूकती ववण रसाल ॥ मो० ॥
चा० ॥ ४ ॥ संयम लीये मुनि पांचशें, सत्तावीश
परिवार ॥ मो० ॥ चरण करण गुण आगला, जेह

सखी मांकडे महाजन घेरीयो रे ॥ ५ ॥ सखी उंदरे मेरु हलावियो रे ॥ सखी सूर्य अजवालुं नवि करे रे ॥ सखी लघु बंधव बत्रीश गया रे ॥ सखी शोके घडी नहीं बेनडी रे ॥ ६ ॥ सखी शामलो हंस में देखीयो रे ॥ सखी काट वळ्यो कंचनगिरि रे ॥ सखी अंजनगिरि उज्ज्वल थया रे ॥ सखी तोहे प्रभु न संभारीया रे ॥ ७ ॥ सखी वयरसामी सुता पारणे रे ॥ सखी श्राविका गावे हालरां रे ॥ सखी म्होटा थइ अर्थ ते कहेजो रे ॥ सखी श्रीशुभवीरने वाहला रे ॥ ८ ॥ इति हरियालीनी गहुंली ॥ ८५ ॥

॥ अथ चूनडी अयाशीमी ॥

॥ हांजी समकित पालो कपासनो, हांजी पंजण पाप अढार ॥ हांजी सूत्र जलुं रे सिद्धांतनुं, हांजी टालो आठ प्रकार ॥ हांजी शीयल सुरंगी चूनडी ॥ १ ॥ हांजी त्रण गुप्ति ताणो ताणो, हांजी नलीय जरी नव वाड ॥ हांजी वाणो वाणो रे विवेकनो, हांजी खुंटीय खाय ॥ हांजी शी० ॥ २ ॥ हांजी मूल उत्तर गुण घूघरा, हांजी ठेडा बणो ने चार ॥ हांजी चारित्र चंदो वचे धरो, हांजी हंसक मोर च कोर ॥ हांजी शी० ॥ ३ ॥ हांजी अजब बिराजे

चूनडी, हांजी कहो सखी केटलुं मूल्य ॥ हांजी लाखें पण लाजे नहीं, हांजी एह नहीं सम तोल ॥ हांजी शी० ॥ ४ ॥ हांजी पहेली ओढी श्री नेमजी, हांजी बीजी राजुल नेट ॥ हांजी त्रीजी गजसुकुमालजी, हांजी चोथी सुदर्शन शेठ ॥ हांजी शी० ॥ ५ ॥ हांजी पांचमी जंबू स्वामीने, हांजी छठी धनो अणगार ॥ हांजी सातमी मेघ मुनीसरू, हांजी आठमी एवंती कुमार ॥ हांजी शी० ॥ ६ ॥ हांजी सीता कुंता डौपदी, हांजी दमयंती चंदनबाल ॥ हांजी अंजना ने पद्मावती, हांजी शीयलवती अतिसार ॥ हांजी शी० ॥ ७ ॥ हांजी अजब बिराजे रे चूनडी, हांजी साधुनो शणगार ॥ हांजी मेघ मुनीसर एम जणे, हांजी शीयल पालो नर नार ॥ हांजी शी० ॥ ८ ॥ इति ॥ ८६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्याशीमी ॥

॥ धरे आवोजी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥

॥चालो सहियरोजी साधुजी वंदीयें, श्रीवीतरागपट्टोधार रे ॥ चउनाणी सोहम गणधरु, सूत्र रयण तणा भंडार रे ॥ चालो० ॥ १ ॥ एकविध असंयम टालता, धर्म दोय यति एही गमता रे ॥ त्रि

विध गारवने परिहरे, चार सुखशय्या मांहे रमता रे ॥ चालो० ॥ २ ॥ प्रमाद तजे जजे व्रतीने, जय टाळे मातने पाळे रे ॥ नियाणां न करे साधु जी, दश श्रमण धरम अजुवाळे रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ श्रद्धावंती शुरू श्राविका, गुरु आगम जक्ति करंती रे ॥ गुरु आगमपूरे गहूंअली शासन करती बहु उन्नति रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ जिनवाणी अनुजवरस जरी, गुरु उत्तम रचना मुखथी रे ॥ सुणतां पामे निज आतमा, सुख अनुजवमां रहे एथी रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ तपनी जाष्य अध्यार्शीमी ॥

॥ साहेबा महारा अरज करुं हुं कंत, कहे सुणो कामिनी जी ॥ साहिबा महारा गुरुउपदेशें हुं सहियां मांहे कपनी जी ॥ १ ॥ सा० ॥ आज्ञा आपो, मास खमण तप आदरुं जी ॥ सा० ॥ अवसर पामी, मानव जव सफळो करुं जी ॥ २ ॥ गोरी माहारी हाथ न चाले, मन नवि चाले माहरुं जी ॥ गोरी महारी ए तप महोटुं, शरीर खमे नहि ताहेरुं जी ॥ ३ ॥ सा० ॥ स्योने आदरुं, संवत्सरीना लोजा पापरुं जी ॥ सा० ॥ मान मागुं हुं, अंतराय तमें कां करो जी ॥ ४ ॥ गोरी अमें आज्ञा आपी, पचक्काण जइ

ता ज्ञान अभ्यास ॥ मो० ॥ चा० ॥ २ ॥ पहेलो अध्यातमयोग जे, भावनायोग तेम जाण ॥ मो०॥ ध्यानयोगें त्रीजो सही, समता योग मन होय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ एम अनेक गुणें शोभता, वीर आणा लेइ मान ॥ मो० ॥ गोयमस्वामी समोसर्या, राजग्रही उद्यान ॥ मो० ॥ चा० ॥ ४ ॥ श्रेणिकराय आवे वांदवा, सुणी आगमन उदंत ॥ मो० ॥ क्षायिक समकितनो धणी, वांदे गुरु गुणवंत ॥ मो०॥ चा० ॥ ५ ॥ इण अवसर राणी चेलणा, नाव सजी शणगार ॥ मो० ॥ अन्हार्पीठ उपर सही, गहूंली करे मनोहार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ६ ॥ तव गोयम दिये देशना, सेवो भविक सिद्ध चक्र ॥ मो० ॥ आंबिल ओली आराधियें, जिम न पडो भवचक्र ॥ मो० ॥ चा० ॥ ॥ ७ ॥ पांचे धर्मीने चार धर्म छे, धर्मी सेव्या धर्म होय ॥ मोरी० ॥ मयणा ने श्रीपालनो, संबंध कहे सवि सोय ॥ मोरी० ॥ चा० ॥ ८ ॥ वली नवपदमय छे आतमा, आतम नवपद जोय ॥ मो० ॥ ध्येय ध्याता ध्यान एकथी, भेद रह्यो नवि कोय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ९ ॥ आतमधर्मनि देशना, धारजो हृदय मझार ॥ मो० ॥ क्षिमाविजय जस संपदा, शुभवि

फेरा हो भवमांहि अनंत ॥ आतमराम सुगुरु हवे, मुक्त दीजें हो सहि सुख अनंत॥ वलि० ॥७॥इति॥

॥ अथ गहूंली एकाणुंमी ॥

॥ रूडीने रढियाली रे समकित श्राविका रे ॥ सज करि शोल जला शणगार, कर धरी रजत रकेबी सार ॥ रूडीने० ॥ १ ॥ कुंकुम रूडी मांहे कुंकावटी रे ॥ कुंकुम थाल जस्यो करि श्रीकार, निरखवा चाली गुरु देदार ॥ रूडीने० ॥ २ ॥ सहियर टोली रे साथें मली संचरी रे ॥ जई गुरु केरा वंदे पाय ॥ गहूंली करे शुज चित्त लाय ॥ रूडीने० ॥ ३ ॥ मंगल करती रे निज आतम जणी रे ॥ वलि जलो कंकणनो करे रणकार ॥ थाय रूडो जांजरनो जमकार ॥ रूडीने० ॥ ४ ॥ लूछणां करती रे गुरुगुण हेजशुं रे ॥ श्रीफल जवती करे रंगरोल ॥ जाणती नथी कोइ गुरुने तोल ॥ रूडीने० ॥ ५ ॥ मंगल करती हियडे हेजशुं रे ॥ वलि सुणी आगमनो समुदाय ॥ जवजल सायर तरण उपाय ॥ रूडीने० ॥ ६ ॥ उत्तम घरनी रे श्रवणें चेतना रे ॥ सांजली हैयडे हरख न माय ॥ प्रेम कहे जिम अमिय समाय ॥ रूडीने० ॥ ७ ॥ ९१ ॥

॥ अथ जयंती श्राविकानी गहूंली वाणुंमी ॥
॥ फतमलनी देशी छे ॥

॥ चित्तहर ॥ ॥ चोवीशमा जिनराय, नयरी कोसं बी समोसस्या ॥ चि० ॥ मनमोहन मुनिराज, चउ द हजारें परवस्या ॥ १ ॥ चि० ॥ सुरनर परषदा बार, रतन गढें आवी ठस्या ॥ चि० ॥ बेठा सिंहा सन नाथ, चामर छत्र अलंकस्या ॥ २ ॥ चि० ॥ वंदे उदा यन भूप, रूप चार दर्शन दिये ॥ चि० ॥ समकिती व्रत धर लोक, कोक कमलपरें विकसियें ॥ ३ ॥ चि० ॥ रंजा अप्सरा ताम, गहूंली करीने वधावती ॥ चि० ॥ रूपें जयंती समान, नामें जयंती माहासती ॥ ४ ॥ चि० ॥ वीर अक्षर दोय मंत्र, जपती नित्य जपमालिका ॥ चि० ॥ जक्ति सोवन रसी देह, जेह हजूरी श्रा विका ॥ ५ ॥ चि० ॥ नणाद जोजाइ साथ, नाथ आगल ऊनी रही ॥ चि० ॥ प्रश्न पूछे कर जोडी, प्रजुजी उत्तर देता सही ॥ ६ ॥ चि० जागता उंघता कोण, उद्यमी आलसु कोण जला ॥ चि० ॥ धर्मी अधर्मी लोक, शतक बारमे जगवइ वरा ॥ ७ ॥ चि० ॥ सुणी हरखित कहे देव, महेर नजर महोटा तणी ॥ चि० ॥ थइ हुं जगविख्यात, जो प्रजु पोता

नी गणी ॥ ८ ॥ चि० ॥ विचरो देश विदेश, पण मुज हृदय वसो सदा ॥ चि० ॥ श्री शुजवीरजिणंद, बेह न देशो मुफ कदा ॥ ए ॥ इति ॥ ए२ ॥

॥ अथ गहूंली त्राणुंमी ॥

॥ सुण वात कहुं साहेली रे, गुरु गुण गावा टेव पडी ॥ नहिं आवे फरी आ एवी रे, पुण्यतणी आ एक घडी ॥ सुण० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सहु सखीयो मलीने चाली रे, गुरु आगल जइ पाय पडी ॥ एकेक थकी अधिकेरी रे, गुरुगुण गाती हर्ष धरी ॥ सु० ॥ २ ॥ नव अनंता जमनां रे, पुण्य संयोगें योग मल्यो ॥ जिनवाणी अती मीठी रे, सुरतरु महारे आज फल्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसारसमुद्रने तरवा रे, जोने एहिज जाहज समी ॥ जिनवाणी अतिसारी रे, जविजनने हृदयं अतिय गमी ॥ सु० ॥ ४ ॥ योग्य जीवने हितकारी रे, शांत सुधारस ए वाणी ॥ नय निक्षेप प्रमाणी रे, अनेक गुणनी जे खाणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ रत्नत्रयनुं कारण रे, तारण जव्यने एह सही ॥ सरस सुधारस जेहनी रे, देवेंद्रसूरियें एह कही ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रजु मुखचिटथी खरती रे, गणधर लीये चित्त धरी ॥ अंग उपांगनी रचना रे, नय

गम जंग अनेक करी ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रवचन कुशमे गुंथी रे, मुनिवर राजने कंठ ठवी ॥ देवेंद्र सूरि एम जांखे रे, जविजन प्राणी ए खेत जणी ॥ सु० ॥ ८ ॥ स्वस्तिक पूरे मनरंगें रे, गुरु मुख जोती सुविशाखा ॥ प्रेमेथी जविजन जावो रे, अमर लहे वर शिव वा सा ॥ सु० ॥ ए ॥ इति ॥ ए३ ॥

॥ अथ रूपैयानी गहूंली चोराणुंमी ॥ धोखनी देशीमां ॥

॥ देश मूलकने रे परगणां, हाकम हुकम करंत ॥ ठडिदार चोपदार उजला, ए सहु महोटा जाइ धरंत॥ रूपैयानी शोजा रे शी कहुं ॥ १ ॥ कलबी ठोगाली पालखी, रथ धरी वृषरमाल ॥ सेवक हींडे रे मलप ता, धनपाल घोडीनी चाल ॥ रूपैया० ॥ २ ॥ उंचा उंचा मंदिर मालियां, खाजलीयाला ठे गोंख ॥ कोरणी याला ठे गोख ॥ रु० ॥३॥ आवो वेसो रे सहु करे, वली दीये आदर मान ॥ तोंये पण वेसे नहीं, नहीं सां जले देइ कान ॥ रु० ॥ ४ ॥ निर्धन आवे रे ढूक डो, न दीये आदर मान ॥ महोटुं मरडी नीचुं जूए, पग मेलवानुं नहिं ठाम ॥ रूपैया० ॥ ५ ॥ ग्रंथ विनानो रे गांगलो, गरथें गांगा रे शेठ ॥ गरथ विनाना रे शेठीया, दीसे करता रे वेठ ॥ रु० ॥ ६ ॥ विवा

दे०॥ एतो ऋिच विच्च अंगने वाली हो ॥ ए तो वाली रे सुकुमाली रे, चाली मुखडुं वीरनुं जी ॥ ६ ॥ लली लली देती उवारणां ॥ दे० ॥ एतो समकित निर्मल करती हो ॥ एतो धरती रे गुण धरती रे, जिहां प्रजुजी विचरता जी ॥ ७ ॥ एणी परें नाची नमी करी ॥ दे०॥ एतो अनुजव सुख मतवाली हो ॥ एतो गाली रे निज जव टाली रे डुःखडुं पहोती स्वर्गमां जी ॥ ८ ॥ वाचक रामविजय कहे ॥ दे० ॥ एतो समकितवंतनी करणी हो ॥ एतो वरणी जिनजक्ति नीसरणी हो ॥ शिव मंदिर तणी जी ॥ ए ॥ इति ॥ ८५ ॥

॥ अथ गहूंली ठन्नुंमी ॥

॥ ते तरिया जाइ ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥आज नगरमां महिमा उछव, जलें अम्ह गुरु आव्या रे॥ संघ सहुने मनमां जाव्या, आणंद हरखें वधाव्या रे ॥ आज० ॥ १ ॥ पंच समिति त्रण गुप्तियें गुप्ता, छकाय जीवने पाले रे ॥ पंच माहाव्रत सूधां धारे, पंचाचारशुं माले रे ॥ आज० ॥ २ ॥ आगम गुरुनो सांजली हर्षित, वंदन बहु जन आवे रे ॥ नर नारीतो मलि मलि टोलें, गुरुगुण गहूंली गावे रे ॥ आज० ॥ ३ ॥ शुजपरिणति वर पट्ट बिठाइ, आरम

मन रंगशु, सुणीयेंजी सूत्र विशाल ॥ मोरी० ॥ च० ॥ ३ ॥ धवल मंगल गावे गोरडी, वाजंते ढोल निशान ॥ मोरी० ॥ ललि ललि कीजें जी लुछणां, धरताजी धर्मनुं ध्यान ॥ मोरी० ॥ च० ॥ ४ ॥ नगर लोक सहु हरखियां, वाध्योजी धर्मनो रंग ॥ मोरी० ॥ वीरशासन मांहे पहवा, मलूक जाव अनंग ॥ मो० ॥ ५

॥ अथ चक्रेसरी मातानी गरबी नवाणुंमी ॥

॥ अलबेली रे चक्रेसरी मात, जोवाने जइयें ॥ जेह नां सोवन वर्णां गात्र, जोवाने जइयें ॥ ए आंकणी ॥ जोवा जइयें पावन थइयें, देखी मन गहगहीयें रे ॥ एक तीरथ बीजी जगदंबा, वंदी संपत लहीयें ॥ जो० ॥ अ० ॥ १ ॥ थाल नुआली अति लटकाली, मृगपति वाहन वाली रे ॥ जिनगुण गाती सेनी साली, नीरखनी रखवाली ॥ जो० ॥ अ० ॥ ॥ २ ॥ श्री सिद्धाचल गिरि पर गाजे, देखी देव समाजे रे ॥ रंगित जाली गोख बिराजे, घडी घडी घडीयालां वाजे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाटडी लाल गुलाल सोहावे, पीला राता चरणा रे ॥ बहु शोभे छे जग जननीने, केशर कुंकुम वरणा ॥ जो० ॥ अ० ॥ ४ ॥ झलके कर कंकणने चूडी, नवसरो हैयडे हार रे ॥

रत्नजडित जांजर ठे चरणे, घूघरीयें घमकार ॥ जो० ॥ श्र० ॥ ५ ॥ नाके मोती उज्ज्वल वाने, बाजुबंध बेहु बाहें रे ॥ केडें कटि मेखला रणजणती, फलके हीरा मांहे ॥ जो० ॥श्र० ॥ ६ ॥ देश देशना न्हाना महोटा, संघ लइ संघवी आवे रे ॥ ते सहु पहेलां श्रीफल चूनडी, जगजननीने चढावे ॥ जो० ॥ श्र० ॥ ७ ॥ धन्य धन्य ए श्रीपुंमरगिरि जिहां, जगदंबानो वास रे ॥ जे कोइ ए तीरथने सेवे, तेहनी पूरे आश ॥ जो० ॥ श्र० ॥ ८ ॥ संघवी संघतणी रखवाली, श्रीजिन सेवाकारी रे॥ दीपविजय कहे मांगलिक करजो, ठवहु शोजा तारी ॥ जो० ॥ श्र० ॥ ए॥

॥ अथ गहूंली शोरमी ॥

॥ शामलिया शामजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानगुणें वस्या रे, अरिहा अजित जिणंद जगवान ॥ आवी समोसस्या रे, नयरी साकेतन उद्यान ॥ साथें पटोधरा रे, सिंहसेनादिक वर गणधार॥ एक लाख मुनिवरा रे, ज्ञान क्रियाना जे जंमार॥१॥ क्षपक आरोहिने रे, मुनि गुणठाणे चढता जाय ॥ वर निरमोहीने रे, केइ मुनि घाती करम खपाय ॥ केइ परिपाटीयें रे, दुक्कर तप अजिग्रह करनार ॥

इम बहु घाटीयें रे, प्रभुने संघे ठे परिवार ॥ २ ॥ सहु देवें मलीरे, कीधुं समवसरण मंडाण ॥ वेग मन रली रे, त्रीजा गढमां त्रिभुवन जाण ॥ जइ श्रा रामीयें रे, दीधी वधाइ प्रभुनी ताम ॥ पटखंड सा मीयें रे, पूरित मनोवंछित काम ॥ ३ ॥ बहु आडंब रें रे, आवे चक्रिसगर उत्साह ॥ जक्ति पुरस्सरें रे, वांदे प्रभुजीना पाय ॥ प्रभु दीये देशना रे, जविपण ने प्रेम प्रकाश ॥ चार प्रकारने अनुसरी रे, पामो जविपण जव निस्तार ॥ ४ ॥ सखीयें परवरी रे, नामें रल सुकेशा नार ॥ अति हरखें करी रे, पूरे मंगल आठ उदार ॥ त्रण खमासणं रे, वांदे वधावे थइ उमाल ॥ रंगजरथी सुणे रे, प्रभुनां अमृत व यण रसाल ॥ ५ ॥ इति ॥ १०० ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने एकमी ॥

॥ द्वारिका नयरी सुंदरु ॥ ताहजी ॥ सहसावन अ जिराम हो ॥ गुणवंती गहूंली करे फागमां ॥ यारुजी ॥ १ ॥ नेम जिणंद समोसरया ॥ ता० ॥ वन पालक दीये वधाइ हो ॥ गु० ॥ श्रीकृष्ण अयमही पी अपशुं ॥ ता० ॥ वंदन पडह वजाय हो ॥ ॥ गुरु० ॥ २ ॥ पंच अनिगम साचवी ॥ ता० ॥ वांदे

तिहां गोविंद हो ॥ गु० ॥ जगगुरु आगल गहूंली करे ॥ ता० ॥ देखी प्रभु मुख अरविंद हो ॥ गु० ॥ ॥ ३ ॥ अढारज चोक उपरें ॥ ता० ॥ नक्ति कुंकुम रंग रोल हो ॥ गु० ॥ पंच प्रमादनी तर्जना ॥ ता० ॥ पंच रत्न ठवित अमोल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥ ज्ञान गुलाल उडावतां ॥ ता० ॥ तप अबीर न रि नरि मूठि हो ॥ गु० ॥ दर्शन पीचकारी नरी ॥ ता० ॥ चारित्र परिमल उत्कंठी हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ नावना वसंत गाये तिहां ॥ ता० ॥ गिरुआ नेम नी पास हो ॥ गु० ॥ समकित फगुवा तिहां दिये ॥ ता० ॥ जेथी जाये नवनी काश हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ गहूंली एणी परे कीजीयें ॥ ता० ॥ पामे मुक्ति वि लास हो ॥ गु० ॥ पंमित ज्ञान शिवपद लहे ॥ ता० ॥ विनयें सफल होयें आश हो ॥ गु० ॥ ७ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने बेमी ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो मोरी रह्यो री ॥ ए देशी ॥

चंपानयरी उद्यान, सुरतरु मोरी रह्यो री ॥ वीर प टोधर धीर, सोहम आय रह्योरी ॥ १ ॥ जीय कोह जीय मान, माया लोन दह्योरी ॥ संपूरण श्रुतज्ञान, जिनवर बिरुद वह्योरी ॥ २ ॥ आश्रव विषय प्रमाद,

निद्रा पंच तजेरी ॥ दशविध सामाचारी, षटविध जय णा जजेरी ॥ ३ ॥ उपकारें धरे वार, जावना तप पडिमारी ॥ निःकारण जगबंधु, रवि शशी मेह समारी ॥ ४ ॥ कंचन कमल विचाल, बेसी धर्म कहेरी ॥ जेहथी जविपण लोय, आतम तत्त्व लहेरी ॥ ५ ॥ कोणिक जूपति नारि, घोयली गेली करेरी ॥ मायक मोति वधाय, पुण्य जंमार जरेरी ॥ ६ ॥ जिनशास ननी जक्ति, करतां पाप हरेरी, सोहव सरिखे साद, घोयली गीत जणेरी ॥ ७ ॥ इति ॥ १०२ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने त्रणमी ॥ आठे सालनी देशी ॥ ज्ञानादिक गुणखाण, राजगृही उद्यान ॥ गणधर लाल ॥ सोहम सामी समोसस्या जी ॥ १ ॥ कंचन गौर शरीर, वाणी गंगा नीर ॥ ग० ॥ त्रिहुं पंथें प सरे सदा जी ॥ २ ॥ अंग उपांगह धार, दशविध रुचिनो धार ॥ ग० ॥ डुगविध शिक्षा उपदिसे जी ३ ॥ तेर क्रिया व्रत धार, गिहि पडिमा अगीया र ॥ ग० ॥ श्रावक गुण जेद सिद्धना जी ॥ ४ ॥ विनय वैय्यावच्च कल्प, धरे दशविध उ अकल्प ॥ ग० ॥ पंदन दोष विकथा तजे जी ॥ ५ ॥ कुंकुम रोल कचोल, गहूंली करे रंगरोल ॥ ग० ॥ अद्दात श्री

फळ उपरें जी ॥ ६ ॥ मगधाधिपनी नारी, शोल स जी शणगार ॥ ग० ॥ ललि ललि करती लूंछणां जी ॥ ७ ॥ जोती गुरुमुख चंद, पामती परमानंद ॥ग०॥ चतुर चकोरडी गोरडी जी ॥ ८ ॥ सुरवधू नरवधू कोडि, मलि मलि सरखी जोडि ॥ ग० ॥ गावे जिन शासन धणी जी ॥ ए ॥ इति ॥ १०३ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने चारमी ॥

॥ पंचम पदने गाइयें रे ॥ ए देशी ॥

॥श्रुतनाणी श्रुतधर गुरु रे, पंचाश्रवना त्यागी रे ॥ दशत्रिक वेत्ता जाव समेता, संवर तप सोजागी ॥ धन गुरु वंदो रे ॥ वंदो रे जगत हितकार ॥ धन०॥ ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीवाजिगम ए सूत्रजमांहे, जीवाजीव विचार रे ॥ इग दु ति चउ पण उविहा, जूजूआ जेद उदार ॥ धन० ॥ २ ॥ शशी रवि ग्रह नक्षत्र तारा, जंबु लवणें धमणा रे ॥ धाइय त्रिगुणा जाणजो सघले, चउदिशि फरे परिजमणा ॥ धन० ॥ ३ ॥ इण परें देशना दिये गुरु नाणी, पुण्य पाप उंखखाणी रे ॥ श्रद्धा जासन तत्त्वरमणथी, थाये अनुजव नाणी ॥ धन० ॥ ४ ॥ श्रद्धावंत सुश्राविका रे, निसुणी श्रीजिनवाणी रे ॥ सन्मुख जोती अद्भुत

संचरिया ॥ चा० ॥६॥ विजयराज सूरीश्वगछराया, पट्टोधर चंद्रोदय गाया ॥ जिनवाणी सुधारस पाया, जवि जीवें निर्मल गुण गाया ॥ चा० ॥७॥ १०६॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने सातमी ॥ थारा मट्टेला उपर ॥ मेह जरूखे वीजली ॥ हो लाल ॥ ज० ॥ ए देशी ॥

॥ शोल करी शणगार, सोहागण जामिनी हो लाल॥ सोहागण जामिनी ॥ ठंढी नवरंग घाट, चाले गज गामिनी हो लाल ॥च०॥ शीलवती कर थाल, ग्रही कुंकुम जरी हो लाल ॥ ग्रही० ॥ आवे समोसरण मांहे, हैये उलट धरी हो लाल ॥हैये०॥ १॥ सिंहासन मणि पीठ, विराजत जगधणी हो लाल ॥ विरा० ॥ वीरजिनेश्वर वाणि, वखाणे अति घणी हो लाल ॥ वखा० ॥ घट घटि पर्यंत, प्रकाशे परवडो हो लाल ॥ प्रका० ॥ नैगम अर्थ प्रवाह, त्रिभुवन दीवडो हो लाल ॥ त्रिभु० ॥ २ ॥ कुमति मत अंधकार, हरे ज्युं दिनमणि हो लाल ॥ हरे० ॥ पार्षद हर्षित थाय, लहे जिम सुरमणि हो लाल ॥ लहे० ॥ सुणी ...ी वाणी, करे गुण गहूंअली हो लाल ॥करे०॥ ...ो चोखा मान, सोपारी ऊजली हो लाल ॥ सो ॥ ३ ॥ वधावे मुनिराय के, दिलमांहे हरखती

पाप वचन नवि बोले जी ॥ केसर चंदनें जिन सवि पूजे, जवजय बंधन खोले जी ॥ नाटक करीने वाजित्र वजाडे, नर नारीने टोलें जी॥ गुण गावे जिनवरना इण विध, तेहने कोइ न तोले जी ॥ २ ॥ अठम जत्त करी सह पोसह, वेसी पौषध साले जी ॥ राग द्वेष मद मत्सर छांमी, कूड कपट मन टाले जी॥कल्पसूत्रनी पूजा करीने, निशिदिन धर्म माले जी॥ एहवी करणी करतां श्रावक, नरक निगोदिक टाले जी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणुं करियें शुद्ध जावें, दान संवत्सरी दीजें जी ॥ समकेतधारी जे जिन शासन, रात्रि दिवस समरीजें जी ॥ पारणवेला पडिलाजीने,मनोवांछित महोत्सव कीजें जी॥ चित्त चोखे पजूसण करशे, मन मान्यां फल लेशे जी ॥४॥१००॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने नवमी ॥

॥ वीरजीने वचने अमृत रस फरे रे ॥ए देशी॥

॥जक्ति करीजें रे जवि श्रुतधर तणी रे,जेहनी साख जरे जिणदेव॥ संदेह पूठीजें नित मेव ॥जक्ति० ॥ १ ॥ तुंगीया नामें रे नगरी अति जली रे, जिहां श्रावक घारे व्रतधार ॥ जेहनां मोकलां घर तणां घार ॥ जक्ति० ॥ २ ॥ गुणना रागी रे जाण नवत

॥ गहूंली एकशो दशमी ॥

॥साहेली महारी राजगृही उद्यान, प्रभुजी समोस
स्था रे लोल ॥सा०॥ गणधर मुनिवर सहस, चौद
शुं परिवस्था रे लोल ॥सा०॥ करता जवि उपकार,
दया मन धारीने रे लोल ॥ सा० ॥ सकल जंतु प्र
तिपाल, विरुद संजारीने रे लोल ॥ १ ॥ सा० ॥ली
धो ठे अवतार, जगत प्रतिबोधवा रे लोल ॥सा०॥
चउगइ दुःख जंजाल, प्रतिमल रोधवा रे लोल ॥सा०
अणहूंते सुरकोडि, सेवामां नित्य रहे रे लोल ॥ सा०॥
कर जोडी मोडी मान, आण शिर निर्वहे रे लोल॥
२ ॥ सा० ॥ चार निकायना त्रिदश, मली त्रिगडो करे
रे लोल ॥ सा० ॥ चार गाउ परमाण, चतुर्मुख उच
रे रे लोल ॥सा०॥ जिनमुखपूरव पाय पीठ, विराजे
गणधरू रे लोल ॥सा०॥ आठ पर्षदा सुरराज, चार
तिहां नरवरू रे लोल ॥३॥सा०॥ कहे वनपाल जूना
थने, नाथ जी पधारिया रे लोल ॥सा०॥ मगधाधि
प जूपाल, जुजाल मनरंजीया रे लोल ॥ सा० ॥ देइ
वधामणी सार के, जिनगुण गावतो रे लोल॥सा०॥
कंचन रजत ते आठ, दूरथी वधावतो रे लोल ॥
४ ॥सा०॥ हय गय रह जड चतुरंग, सैन्य जरजारशुं

॥ स० ॥ शास्त्र तणे अनुसारें रे ॥ २ ॥ स० ॥ स
मता गुणना दरीया रे ॥ स० ॥ क्रिया पात्रना जरी
या रे ॥ स० ॥ ज्ञान तणा जंडार रे ॥ स० ॥ क
हेतां न आवे पार रे ॥ ३ ॥ स० ॥ मधुरी वाणी
यें जांखे रे ॥ स० ॥ संघ स्वाद सर्वे चाखे रे ॥स०
प्रश्न व्याकरण वंचाय रे ॥ स० ॥ आश्रव संवर अ
र्थ थाय रे ॥ ४ ॥ स० ॥ उपर चरित्र वंचाय रे ॥
॥ स० ॥ पृथ्वीचंद कुमार रे ॥ स० ॥ सुणतां वैरा
ग्यवंत थाय रे ॥ स० ॥ अज्ञान मिथ्याय हगावे रे
॥ ५ ॥ स० ॥ पट चेला तमें जाणो रे ॥ स० ॥
विनय गुणनी खाणो रे ॥ स० ॥ जोवन वयमां बे
सरखा रे ॥ स० ॥ वंदो पूजो ने हरखो रे ॥ ६ ॥
स० ॥ जंगम तीरथ कहीयें रे ॥ स० ॥ वंदीने पा
वन थइयें रे ॥स०॥ संघना पुण्यें अहीं आव्या रे
॥ स० ॥ जैनधर्मने दीपाव्या रे ॥ ७ ॥ स० ॥ जाव
सहित जक्ति करजो रे ॥ स० ॥ पुण्यनी पोठी तमें
जरजो रे ॥ स० ॥ जरतबाहु पेरें तरशो रे ॥स०॥
समुद्रपार उतरशो रे ॥ ८ ॥ स० ॥ व्रत पच्चखाण
घणां थाय रे ॥ स० ॥ सात क्षेत्रें धन खरचाय रे
॥ स० ॥ देहरे देहरे उछव मंकाय रे ॥स० ॥ चोथो

आरो वरताय रे ॥ ए ॥ स० ॥ सधवा स्त्री गहूंली प्रः
हाडे रे ॥ स० ॥ मुक्ताफलशुं वधावे रे ॥ स० ॥ ना
गर पानासुत गावे रे ॥ स० ॥ मगन लागे मुनि
पाये रे ॥ स० ॥ पास जिनंदने पूजो रे ॥ स० दु
नियामां देव न दूजो रे ॥ १० ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ अथ मुनिराज श्री मोहनलालजी माहाराजनी ॥
॥ गहूंली एकशो बारमी ॥

॥ हो मुनिवरजी, तुज अति मीठी वाणी मुज म
नमां वसी ॥ ए आंकणी ॥ तमें नविक जनोने बोधो
छो, मुक्ति तणो मारग शोधो छो, वलि काम कषायने
रोधो छो ॥ हो मुनि० ॥ १ ॥ तमें नवसागरथी तरि
या छो, अगणित गुणोथी नरिया छो, वली ज्ञानतरंग
ना दरिया छो ॥ हो मुनि० ॥ २ ॥ तुम दरिसनथी
दूरित जावे, सवि जन वलि सुख संपति पावे, नर
नारी मलीने गुण गावे ॥ हो मुनि० ॥ ३ ॥ तुम मु
ख कमलाकर शोजे छे, नविजन नमराने थोजे छे,
मन शुक्तिरमामां लोने छे ॥ हो मुनि० ॥ ४ ॥ एवा
मोहनलालजी मुनिराया, तजी चित्तथकी जेणें मा
या, हिरालाल कहे में गुण गाया ॥ हो मुनि०॥५

॥ अथ मुनिराज श्रीमोहनलालजी माहाराजनी ॥

॥ गहूंली एकसोने तेरमी ॥

॥ मुनिवर संयममां रमता, शिवपुर जावानो स
प करता. अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी
॥ मुनिवर विचरंता आव्या घट चेला साथे लाव्या
मुंबईना संघने मन भाव्या ॥ मुनिवर० ॥ शि० ॥
अहो० ॥ १ ॥ मुनिवर संयममां शुरा, मुनिवर कि
रियामां पूरा परिणामे मुनि अति रूडा ॥ मुनि०
शि० ॥ अ० ॥ २ ॥ मुनिजीनी देशना बहु सारी
भविजनने लागे प्यारी प्रतिबोध पाम्यां नर नारी
मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुनिवरे लाभ घण
लीधा, श्रीसंघनां कारज अति सीधां, उपकार एवा
माहा मुनियें कीधा ॥ मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ मु
नाम घणुं सारू, मोहनलालजी लागे प्यारू
जिनशासन घणुं अजवाल्युं ॥ मु० ॥ शि० ॥ अ०
५ ॥ जे मुनिवरना गुण गावे, शिवपुर नगरी
जावे, मनग कहे मुनिवरने ध्यावे ॥ मु०
॥ अहो० ॥ ६ ॥ इति ११३ ॥

॥ अथ मुनिराज श्री खांतिविजयजी माहाराज
॥ नी गहूंली एकशोने चोदमी ॥
॥ नेक नजर करो नाथजी ॥ ए देशी ॥
॥खांतिविजय मुनि वंदियें,जेथी भवतरुकंद निकंदी यें जीहो, खांतिविजय मुनि वंदीयें ॥ ए आंकणी॥ जेनी अमृत धारा सारिखी, गुणखाणी वाणी वखा णीयें जी हो ॥ खांति० ॥१॥ नित्य छठ अठम तप स्या करे, जेनुं सदाय ध्यानमां ध्यान छे जीहो ॥ खांति० ॥ २ ॥ जेनां ज्ञान तणो महिमा घणो, मा नुं केवली हुं कलिकालमां जी हो ॥ खांति०॥ ३ ॥ जेणें ममता तजी संसारनी, एक मुक्तिलणी ममता करी जी हो ॥खांति०॥ ४ ॥ हिराचाल कहे मुनि ते नमो,जेथी पाप जशे सवि दूरथी जी हो ॥ खांति० ॥५
॥ अथ माहामुनिराज श्रीआत्मारामजी माहाराजनी
॥ गहूंली एकशो ने पंदरमी ॥
॥सांजलजो रे मुनि संयमरागी.उपशम श्रेणें चढि या रे ॥ ए देशी ॥ जमुं थयुं रे मारे सुगुरु पधार्या, जिन आगमना दरिया रे ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान तरंगें लेहेरो लेता, ज्ञान पवनथी जरिया रे ॥ जमुं० ॥ १ ॥ आज कालमां जे जिन आगम,

मां आवे रे ॥ गहन गहन एहना जे अर्थो, प्रगट क रीनें बतावे रे ॥ ज० ॥ २ ॥ शक्ति नहिं पण नक्ति तणें वश, गुण गावा उल्लसावुं रे ॥ कर्णामृत गुरु चरित्र सुणावी, आनंद अधिक वधावुं रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशि जंबुद्वीपमांहि, एही जरतम ऊार रे ॥ उत्तर दिशि पंजाब देश जिहां, लेहेरां गाम मनोहार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ क्षत्रियवंश गणेशचंद घर, जन्म लिया सुख धामें रे ॥ रूपदेवी कुक्षिशुक्तिमां, मुक्ता फल उपमानें रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ लघुवयमां प ण लक्षणथी बहु, दीपंता गुरुराया रे ॥ संगतिथी म ली ढूंढक जननें, ढूंढकपंथ धराया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ संवत ओगणीशें दशमांही, उज्ज्वल कार्त्तिक मा सें रे ॥ पंचमीने दिवसें लिइ दीक्षा, जीवनराम गु रु पासें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ ज्ञान जण्या वली देश फि र्या बहु,जूनां शास्त्र विलोकी रे ॥ संशय पडिया गुरु नें पूछे, प्रतिमा केम उवेखी रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ उत्तर न मिल्या जव गुरुजीनें,ज्ञानकला घट जागी रे ॥सुम ति सखी घट आय वसी जब, ढूंढपंथ दिया त्या गी रे ॥ ज० ॥ ए धर्म शिरोमणि देश मनोहर, गुर्जर जूमि रसाली रे ॥ ज्यां आवी सुविहित गुरुपा

पंचाचारने पालता, टालता कर्मनो चार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ छठ अठमादिक तप करे, वारे विषय विकार हो ॥ सू० ॥ ५ ॥ स० ॥ गंगाजलसम निर्जला, गुण छत्रीशना धार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ रत्नसागर सूरि पटधरु, लब्धितणा भंडार हो ॥ सू० ॥ ६ ॥ स० विचरंता गुरु आविया, सुयरी शहेर मझार हो ॥ ॥ सू० ॥ स० ॥ सुरगुरुसम वाणी वाणी सुणी, हरख्यां सवि नर नार हो ॥ सू० ॥ ७ ॥ स० ॥ उगणीश शें पिस्तालीशें, माहाशुदि त्रिज रविवार हो ॥ सू० ॥ ॥ स० ॥ भाग्यवंत दीक्षा लिये, संघ चउविध मनो हार हो ॥ सू० ॥ ८ ॥ स० ॥ दीक्षामहोत्सव हर्षे करी, पामी हर्ष उल्लास हो ॥ सू० ॥ स० ॥ वास क्षेप सूरियें कर्यो, देवा मुक्तिनो वास हो ॥ सू० ॥ ॥ ९ ॥ स० ॥ उछव रंग वधामणां, हुवे जय जय कार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ चिहुं गति पुरण साथि यो, करे सोहागण नारि हो सू० ॥ १० ॥ स० ॥ गु रुगुण गहूंली गावतां, पातक दूर पलाय हो ॥ सू० ॥ स० ॥ पाटण रहेवासी शामजी, सूरितणा गुण गाय हो ॥ सू० ॥ ११ ॥ इति ॥ ११६ ॥

॥ अथ अचलगछपति पूज्य भट्टारक श्री विवेक
॥सागर सुरिनी गहूंली एकशो ने सत्तरमी॥
॥रंग रसिया रंगरस बन्यो॥मनमोहनजी॥ए देशी
॥ श्री सरसति पद प्रणमियें ॥ गुरु सुखकारी ॥ गा
यशुं गछपति राय ॥मनडुं मोह्युं रे गुरु सुखकारी ॥
॥ ए आंकणी ॥ शासनदेवी पसायथी ॥ गु० ॥ सेव
तां सवि सुख थाय ॥ म० ॥ गु ॥ १ ॥ अचलगछ
पति जाणियें ॥ गु० ॥ श्रीरत्नसागर सूरिराय ॥ म० ॥
॥ गु० ॥ तास पटोधर दीपता ॥ गु० ॥ श्रीविवे
कसागर सूरि राय ॥ म० ॥ गु० ॥ २ ॥ कछदेश
सोहामणो ॥ गु० ॥ लघु आसंबियो मन जाण ॥
म० ॥ गु० ॥ गोत्रदेढया दीपता ॥ गु० ॥ कुलश्रु
रू उसवंश वखाण ॥ म० ॥ गु० ॥ ३ ॥ टोकरसी सु
त शोजता ॥ गु० ॥ जननी कुंता बाइ मात ॥ म० ॥
गु० ॥ वंशविभूषण जाणीयें ॥ गु० ॥ नामविवेक
सिंधु विख्यात ॥ म० ॥ गु० ॥ ४ ॥ मांडवी बंदर
मनोहरु ॥ गु० ॥ श्री संघने अतिघणो प्यार ॥ म० ॥
गु० ॥ संघ चतुर्विध मली करी ॥ गु० ॥ करे पा
ट महोत्सव सार ॥ म० ॥ गु० ॥ ५ ॥ संवत ढंग
वीश अढारसें ॥ गु० ॥ कार्त्तिक वदि पंचम धार

॥ म० ॥ गु० ॥ आचारज पद पामिया ॥ गुं० ॥ तिहां शोभे शुज्ञ शनि वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ६ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ गु० ॥ शिष्य शोभे सवि सार ॥ म० ॥ गु० ॥ जाचकजन संतोषिया ॥ गु० ॥ जस वध्यो मन प्यार ॥ म० ॥ गु० ॥ ७ ॥ मुक्ता फल मूठी जरी ॥ गु० ॥ रचे गहूंली परम उदार ॥ ॥ म० ॥ गु० ॥ गुणवंत गावे प्रेमशुं ॥ गु० ॥ गुरु वंदे वारं वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ८ ॥ अचलगछ पति दीपता ॥ गु० ॥ श्री विवेकसागर सूरिराय ॥ म० ॥ गु० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणमतां ॥ गु० ॥ श्रीसंघने कल्याण थाय ॥ म० ॥ गु० ॥ ए ॥ ११७ ॥

॥ अथ अचलगछपति पूज्यज्ञट्टारक श्रीविवेकसागर सूरीश्वरनी गहूंली एकशो ने अढारमी ॥

॥आ आप उठी उतावली ॥ सहि मोरी रे ॥ में सांजली मीठी वाण ॥ लागे मुने प्यारीरे ॥ आ आचारज गुरु आविया ॥ स० ॥ आ जक्षपुर वंदर मकार, वात स ◌ं रे ॥ १ ॥ आ चरण करण व्रत धारता ॥ स० ॥ श्रावक दीये बहुमान, पुण्य पनोतां रे ॥ आ समिति गुप्ति सूधी धरे ॥स०॥ आ पाले प्रवचन माय, पामे ठकुरी रे ॥ २ ॥ आ दश अरूने दिये देशवटो

॥ १ ॥ शेठ लाडणशा कुलें आया रे, माता जु मायाइना जाया रे, तेथी गुरुजीशुं अधिकेरी माया ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ २ ॥ करतां एणे देश विहार रे, होशे पुण्यजी लाज उदार रे, मिथ्यात्वी होशे व्रतधार ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ३ ॥ जुजनगरमांहे अधिकारी रे, शेठ शिवजीशा समकेतधारी रे, ते तो वाट जुवे छे तमारी ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ४ ॥ शेठ सागण ने काटीया ठमवाल रे, वोरा चुलड ने वणो डा उदार रे, जुजनगर देवाणी मेवाल ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ५ ॥ रुचिवंती सुश्राविका आवे रे, श्रद्धा स मकित स्वस्ति वनावे रे, गुरु सन्मुख मोतीयें वधावे ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ६ ॥ हर्षे ऋद्धिने सुख सवा ई रे, अचल गच्छमां नित्य निरख थाइ रे, सान्निध्यका री छे माहाकाली ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ७ ॥ गुरु चारे चोमासां आया रे, लब्धियें गौतम ऋद्धि पाया रे, मुक्तिसागर सूरि नवाया ॥ सूरीश्वर विन ति अवधारो रे ॥ जु० ॥ सू० ॥ ८ ॥ ११९ ॥

॥ गहूंली एकसो ने वीशमी ॥

॥ जंगमतीर्थ विचरंता, करता देश विहार ॥ भवि क जीव प्रतिबूझवा, करता जग उपकार ॥ १ ॥

ते मुनिवर तारे तरे ॥ ए आंकणी ॥ समिति गुप्ति सूधी धरे, पाले प्रवचन माय ॥ अजय दान मुनिवर दिये, पाले जीव छकाय ॥ ते० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत धारता, पंचाश्रव पच्चक्काण ॥ अष्ट मदने मुनि गालता, पाले पंचाचार ॥ ते० ॥ ३ ॥ द्वादश पडिमाने शोधता, करता आतमशोध ॥ तप जप करे मुनि आकरां काढे कर्मनुं मूड ॥ ते० ॥ ४ ॥ समवाणी करे गोचरी, पाले दोष विशेष ॥ उंच नीचकुल जोवतां, नहिं लोजनो लेश ॥ ते० ॥ ५ ॥ केशी गणधर पधारिया, सावत्थिनयरी उद्यान ॥ राय परदेशी महा पापीयो, धरे साधुनो द्वेष ॥ ते० ॥६॥ प्रश्न पूछे मुनिवर प्रत्यें, जीव अजीव विचार ॥ स्वर्ग नरक जाणुं नही. न गणुं पुण्य ने पाप ॥ ते० ॥७॥ नय उपनय प्रश्न पूरिया, प्रतिबूझयो भूपाल ॥ एक अवतारी ते थयो, पाम्यो मुक्ति महाराज ॥ ते०॥८॥

॥ गहूंली एकशो ने एकवीशमी ॥

॥आज सखि गुरु वंदन करीयें, वंदन करीयें तो जव जल तरियें हो लाल, आज सखि गुरुवंदन करीयें ॥ए आंकणी॥ गछपति गणधरना गुण गाउं, हरख धरी मनमांहे हो लाल ॥ आज० ॥ १ ॥ सूरि शिरोम

णि गुण रागी, कनक रमणीना त्यागी हो सा० ॥आ०॥
पंच समिति त्रण गुप्ति विराजे, प्रवचनमायने पाले
हो सा० ॥ आ० ॥२॥ चरण करण सित्तेरी संजारे,
ज्ञान कल्लोल उछाले हो सा० ॥आ०॥ छत्रीश छत्रीशी
गुण राजे, षट दर्शनमां गुरु गाजे हो सा० ॥ आ० ॥
॥ ३ ॥ वरसे छद्म गुणें गुणवंता, सोहम जंबु मह
ता हो सा० ॥आ०॥ देश काल महिलें विचरंता,सम
कित बीजना दाता हो सा० ॥आ०॥ ४ ॥ राजगृही
नगरीयें पधार्या, श्रेणिक सामइयुं लाव्या हो ॥सा०
॥ आ० ॥ मंत्री अजय कुमार प्रधान, यथोचित गु
णना जाण हो सा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ चेलणा प्रमुख
सहु परिवार, गुरुने वांदे बहु मान हो सा० ॥आ०
आतम बाजोठ पीठ बनावी, गहूंली करे रढियाली
हो सा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोली स्वस्तिक पूरे,
श्रेणिकनी पटराणी हो सा० ॥ आ० ॥ सखि सखि
:० मुख लूछणां करती, शिवनिश्रेणीयें चडती हो
॥ आ० ॥ ७ ॥ गुरुमुख कमल नयणें रे जो
, वचन सुधारस पीती हो सा०॥ आ० ॥देशना
न.ी दरख चराणी, देव जणे मधुरी वाणी हो॥
सा० ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १२१ ॥

॥ अथ श्री कोठारानी गहूंली एकशो ने बावीशमी ॥

॥ जीरे मारे प्रणमुं जिनवर पाय, मूकी मननो आमलो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे शोलमा श्रीजिनराय, शांतिनाथ जी करुणा करो ॥ जीरे जी ॥ १ ॥ जी०॥ पामी तास पसाय, गछपति गुरु स्तवना करुं ॥ जी० ॥ जी० ॥ जंगम तीरथनाथ तीर्थ वंदावो कृपा करी ॥ जी० ॥ २ ॥ जी० ॥ वृद्ध उसवंश उत्पन्न, गुरुकुल वासे दिनमणि ॥ जी० ॥ जी० ॥ रत्न त्रयना निधान माता कुंता धाइयें जनमिया ॥ जी०॥३॥ जी० ॥ ग्रह गणमां ज्योतिचक्र, अविचल राज्यें ध्रुव रहे ॥जी०॥ जी० ॥ मुनि परिवारमां तेम, गुण छत्रीशे शोजता ॥ जी० ॥ ४ ॥ जी० ॥ वारे परनो ठाठ, निज आतम गुण अनुसरे ॥ जी० ॥ जी०॥ कोठारा नगर मझार, श्रावक लोक सुखिया वसे ॥ जी० ॥ ५ ॥ जी०॥ गुरुच रणे लयलीन, रागी सोजागी करे वीनति ॥ जी०॥ जी० नर नारीनां वृंद, बहु आडंबरें लावीया ॥ जी० ॥ ६ ॥ जी० ॥ नव शत सजी शणगार, श्राविका लावे गहूं अली ॥ जी० ॥ जी० ॥ आरम बाजोठ पीठ, प द्मिनी पूरे साथयो ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ समकित श्री फल हाथ, लली लली लीये लूंछणां ॥ जी० ॥

॥जी० ॥ घूंघट खोल्या घाट, विच विच गुरुमुख जोवती ॥ जी० ॥ ८ ॥ जी० ॥ देशना अमृतधार, सांजली श्रोता रस लीये ॥ जी० ॥ जी० ॥ नय गम जंगली जाल, स्यादवाद रचना करे ॥ जी० ॥ ए ॥ जी० ॥ विधि पक्षगछ शिरताज, रत्नसागर सूरीश्वरु ॥ जी० ॥ जी० ॥ तस पाटें पूरींद, विवेक सागर तेजें तपे ॥ जी० ॥ १० ॥ इति ॥ १२२ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने त्रेवीशमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ए देशी॥ ॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया॥नामें सो हम स्वामी, जविकमन जाविया ॥ विषय प्रमाद कषाय, हास्यादिक तजी ॥रमता आतमराम के, निजपरिणति जजी ॥ १ ॥ नीरागी जगवान्, करे गुणदेशना॥ उपकारी असमान के, तारे जविजना ॥ सुणवा जिनवर वाणि, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारीना थोक के, हर्ष मने वहु ॥ २ ॥ वसन आजूषण व्रत, तणा अंगें धरे . कोणिकजूपति नार, हवे गहूंली करे ॥

. सायें आवती ॥ आरम अ

॥ ३ ॥ श्रद्धा कुंकुम घोली,

तम पीठने उपर, जिनगुण

गावती ॥ विनयवती बहुमानथी, एम गहूंली करे ॥ अनुभवनां करि लूंछणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥ द्रव्यभावथी इणि परें, जे गहूंली करे ॥ समकितवंत ते श्राविका, भवसायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजना, गुणसखि मन धरो ॥ पामी मनुज अवतार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ १२३ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो चोवीशमी ॥

॥ चालो सखि जइयें जातरा रे लोल, जिहां छे मरुदेवीनो नंद, शुभभावथी रे ॥ चालो जइयें जिन वांदवा रे लोल ॥ १ ॥ चालतां चरण पावन थयां रे लोल, आतम हर्ष भराय शुभ० ॥ चा० ॥ पीरवडीमां पेसतां रे लोल, नयणां पावन थाय ॥ शु० ॥ चा० ॥ २ ॥ दशशत चैत्य सोहामणां रे लोल, वच्चें अष्टा पद उत्तंग ॥ शु० ॥ चा० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरां रे लोल, चोमुख प्रतिमा चार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ३ ॥ पूर्व द्वारें पेसतां रे लोल, निस्सही कही त्रण वार ॥ शु० ॥ चा० ॥ पांच अभिगमन साचवी रे लोल, प्रदक्षिणा त्रण वार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ४ ॥ मूलनाय क ऋषभनायजी रे लोल, अजितनाथ शिवसाथ ॥ शु० ॥ चा० ॥ चारे दुवारें बिंबथापना रे

द्वारका शोष च्यार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ५ ॥ जिनप्रतिमा जिनमारनी रे लोल, ऋषनजी पूर्वे प्रसिद्ध ॥ शु० ॥ चा० ॥ अष्टापद गिरि सिद्ध थया रे लोल, मशिन पुरें कस्यो विश्राम ॥ शु० ॥ चा० ॥ ६ ॥ शेत्र नरगी सुत श्रीरजी रे लोल, कुंअर अंग सुजात ॥ शु० ॥ चा० ॥ तरा नार्या शुक्लपद्दिणी रे लोल, उत्तम कुलें उत्पन्न ॥ शु० ॥ चा० ॥ ७ ॥ दान शीयल तपस्या गुणे रे लोल, पूरयाई जग विख्यात ॥ शु० चा० ॥ सुगुरु संजोग उपदेशथी रे लोल, चैत्य कस्यां चोसार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ८ ॥ समकितदृढ गुण आरमा रे लोल, ज्ञान नक्ति निमित्त ॥ शु० ॥ सफल नयो दिन आजनो रे लोल, देवयात्रा फल सिद्ध ॥ शु० ॥ चा० ॥ ९ ॥ कल्पवृक्ष फल्यो पुण्य अंकूरथी रे लोल, मुक्ति वस्या सुख नरपूर ॥ शु० ॥ चा० ॥१०॥

इति श्रीगहूंली संग्रहास्य पुस्तकस्य
प्रथमनागः समाप्तः ॥